وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَآ إِلَيْهِمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ ٱلْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَىْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوٓا۟ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾

(१११) तथा यदि हम उनके पास फ़रिश्ते उतार[1] दें तथा इनसे मृत बात[2] करें एवं उनके सम्मुख प्रत्येक वस्तु एकत्रित कर दें[3] तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु इन में से अधिकतर लोग मूर्खता कर रहे हैं ।[4]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا شَيَٰطِينَ ٱلْإِنسِ وَٱلْجِنِّ يُوحِى

(११२) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नों तथा इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को शत्रु बनाया [5] जो परस्पर

---

[1]जैसा कि हमारे संदेशवाहक से वह निरन्तर इस की माँग करते हैं ।

[2]और वह अन्तिम ईशदूत मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) के दूतत्व (रिसालत) को मान लेते ।

[3]इस का दूसरा भावार्थ यह लिया गया है कि जो चिन्ह वह माँगते हैं वह उनके समक्ष पेश कर देते, तथा एक भावार्थ यह लिया गया है कि प्रत्येक वस्तु एकत्र होकर सामूहिक रूप से यह गवाही दे कि संदेशवाहकों की यह श्रृंखला सत्य है तो इन सभी लक्षणों तथा माँगों की पूर्ति कर देने पर भी विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे । इसी अर्थ में यह आयत (मंत्र) भी है ।

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ ءَايَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ﴾

"जिन पर तेरे पालनहार का वचन सिद्ध हो गया । वह दुखद दण्ड का दर्शन किये बिना विश्वास नहीं करेंगे यद्यपि उनके पास हर प्रकार के संकेत आ जाये ।" (सूर: *यूनुस* -९६,९७)

[4]तथा यह मूर्खता की बातें ही उनके एवं सत्य के प्रति विश्वास के बीच आवरण बनी हुई है । यदि अज्ञान का पर्दा उठ जाये तो संभवत: सत्य का प्रबोध कर लें तथा फिर अल्लाह की इच्छा से सत्य को स्वीकार कर लें ।

[5]यह वही बात है जो विभिन्न प्रकार से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना के लिए कही गयी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व जितने भी नबी आये, उन को भी झुठलाया गया, उन्हें यातनायें दी गई इत्यादि । उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार से उन्होंने धैर्य तथा साहस से कार्य किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इन सत्य के शत्रुओं के समक्ष धैर्य तथा दृढ़ता का प्रदर्शन करें । इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के अनुयायी मनुष्यों के अतिरिक्त जिन्नों में से भी हैं तथा ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुष्ट, विद्रोही अत्याचारी, दुराचारी एवं अभिमानी हैं ।

بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾

धोखा देने के लिये रमणीक बात की प्रेरणा देते रहे[1] तथा यदि तेरा पोषक चाहता तो ऐसा न करते ।[2] अत: आप उन्हें तथा उनके षड़यन्त्र को त्याग दें (उनकी चिन्ता न करें)।

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾

(११३) ताकि उनके दिल उसकी ओर प्रवृत्त हो जायें जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं रखते तथा उससे प्रसन्न हो जायें और वही पाप कर लें जो वह लोग कर रहे थे ।[3]

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी अन्य शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी ओर एक सविस्तार शास्त्र (क़ुरआन) उतारा है। तथा हम ने जिनको धर्मशास्त्र दिया है वे जानते हैं कि वास्तव में वह तुम्हारे पालनहार की ओर से ससत्य अवतरित है। अत: आप शंसयी न बनें ।[4]

---

[1]अर्थात मनुष्यों तथा जिन्नों को भटकाने के लिए एक-दूसरे को चालबाज़ी तथा छल की शिक्षा देते हैं । ताकि वे लोगों को धोखे तथा प्रलोभन में डाल सकें। यह बात सामान्य रूप से देखने में आयी है कि लोग शैतानी कार्यों में एक-दूसरे का बढ़-चढ़ कर साथ देते हैं। जिसके कारण बुराई का अतिशीघ्र प्रचार-प्रसार हो जाता है।

[2]अर्थात अल्लाह तआला इन शैतानी चालों को विफल बनाने का सामर्थ्य रखता है, परन्तु वह दबाव से यह कार्य नहीं करता क्योंकि ऐसा करना उसके व्यवस्था तथा नियम के विरुद्ध है, जो उसने अपनी इच्छानुसार अपना रखी है, जिसका भेद वह भली-भाँति जानता है।

[3]अर्थात शैतान के बुरे विचार के शिकार वही लोग होते हैं, तथा वही उसको प्रिय समझते हैं तथा उसके अनुसार कर्म करते है जो परलोक के प्रति विश्वास (आस्था) नहीं रखते, तथा यह सत्य है कि जिस प्रकार से लोगों के दिलों में आख़िरत का विश्वास क्षीण होता जा रहा है, उसी के अनुरूप लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं।

[4]आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके वास्तव में मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा तुम्हारे पोषक के कथन सत्य एवं न्याय में पूर्ण[1] हो गये, उसके कथनों को कोई बदल नहीं सकता तथा वह भली-भाँति सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) यदि आप भूवासियों में अधिकतर का अनुसरण करेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे, वे मात्र निराधार कल्पना का अनुसरण करते तथा अनुमान लगाते हैं।[2]

---

[1]सूचनाओं तथा घटनाओं के आधार पर सत्य है तथा आदेश एवं समस्याओं के निराकरण के आधार पर न्यायिक है अर्थात इसका प्रत्येक आदेश तथा निषेध न्याय के नियमों पर आधारित है। यद्यपि मनुष्य अपनी अज्ञानता अथवा शैतान के बहकाने के कारण इस तथ्य का बोध न कर सके।

[2]क़ुरआन में वर्णित इस सत्यता का अवलोकन प्रत्येक काल में किया जा सकता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴾

"आप की इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।" *(सूर: यूसुफ़-१०३)*

इससे ज्ञात हुआ कि सत्य तथा सत्यता के मार्ग पर चलने वाले सदैव थोड़े ही होते हैं। जिससे यह बात भी सिद्ध होती है कि सत्य तथा असत्य का आधार तर्क तथा प्रमाण है, लोगों की अधिक अथवा अल्प संख्या नहीं। ऐसा नहीं कि जिस बात को बहुसंख्यक ने माना हो वह सत्य हो तथा अल्पसंख्यक असत्य पर हों। अपितु क़ुरआन द्वारा वर्णित इस सत्यता के आधार पर यह सम्भव है कि सत्यगामी अल्पसंख्यक होते हों तथा असत्यवादी बहुसंख्यक। जिसकी पुष्टि हदीस से होती है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे अनुयायी ७३ गुटों में बंट जायेंगे, जिनमें से केवल एक ही गुट स्वर्ग में जायेगा, शेष सभी नरक में जायेंगे। तथा इस स्वर्गगामी गुट की निशानियाँ बतायीं कि जो . « مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي » "मेरे तथा मेरे सहचरों के मार्ग पर चलने वाला होगा।"(अबू दाऊद, किताबुल सून्न: बाब शरह अल सुन्न: संख्या ४५९६, त्रिमिज़ी किताबुल ईमान बाब माजाअ फ़ी इफ़तराके हाज़ेहिल उम्म:

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِۦ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝١١٧

(११७) नि:संदेह आप का प्रभु उनको भली-भाँति जानता है, जो उसके मार्ग से भटक जाता है। तथा वह उस को भी भली-भाँति जानता है, जो उस के मार्ग पर चलते हैं।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِۦ مُؤْمِنِينَ ۝١١٨

(११८) तो(जिस जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उसमें से खाओ यदि तुम उसके आदेशों पर ईमान रखते हो।[1]

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم

(११९) तथा तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का कारण हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो ? यद्यपि अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों का विवरण बता दिया है जिनको

---

[1]अर्थात जिस पशु को शिकार करते समय, अथवा बलि अथवा वध करते समय अल्लाह का नाम लिया जाये, उसे खा लो। यदि वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की अनुमति है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे वैध तथा पवित्र नहीं हैं। परन्तु इससे ऐसी अवस्था अलग है कि जिसमें यह शंका हो कि काटने वाले ने काटते समय अल्लाह का नाम लिया अथवा नहीं ? इसमें आदेश यह है कि अल्लाह का नाम लेकर खा लो। हदीस में आता है आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कुछ लोग हमारे पास मांस लेकर आते हैं (इससे तात्पर्य वे अशिक्षित अरब थे जो नये-नये मुसलमान हुए थे तथा इस्लामी शिक्षाओं तथा नियमों से परिचित नहीं हो पाये थे) हम नहीं जानते कि उन्होंने अल्लाह का नाम लिया है अथवा नहीं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«سَمُّوا عَلَيْهِ أَنْتُمْ وَكُلُوا» (सहीह बुख़ारी बाब जबीहतुल आराब संख्या ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो। अर्थात शंका की अवस्था में यह छूट है। इसका यह अर्थ नहीं कि हर प्रकार के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से उचित हो जायेगा। इससे अधिक से अधिक यह सिद्ध होता है कि मुसलमानों की मंडियों तथा दूकानों पर मिलने वाला मांस उचित है। यदि किसी को सन्देह अथवा शंका हो तो वह खाते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

तुम पर निषेध किया गया है ।[1] परन्तु वह भी जब तुम को अत्यधिक आवश्यकता पड़ जाये (तो उचित है) तथा यह निश्चित बात है कि बहुत से मनुष्य अपने त्रुटिपूर्ण विचारों पर बिना किसी प्रमाण के भटकाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह (तआला) अतिकारियों को भली-भाँति जानता है ।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तुम खुले एवं गुप्त पापों को त्याग दो, निश्चय जो पाप कमाते हैं वे अपने पाप करने का बदला निकट में ही दिये जायेंगे ।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ

(१२१) तथा उसे न खाओ जिस पशु पर (वध के समय) अल्लाह का नाम न लिया गया हो तथा यह (कर्म) अवज्ञा का है ।[2] तथा शैतान अपने मित्रों को प्रेरणा देते हैं ताकि वह तुम से

[1]जिसका विवरण इस सूरः के आगे आ रहा है । इसके अतिरिक्त अन्य सूरतों तथा हदीसों में अवैध जानवरों का विवरण दिया गया है । इनके अतिरिक्त शेष वैध है तथा निषेधित के मांस भी जीवंन रक्षा तक ही प्रयोग करने की अनुमति है ।

[2]अर्थात जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना अवज्ञा तथा अनुचित है । आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इसके यही अर्थ वर्णित किये हैं, वह कहते हैं कि "जो भूल जाये उसे अवज्ञाकारी नहीं कहते हैं ।" तथा इमाम बुख़ारी का भी वही विचार है तथा यही हनफ़ी समुदाय का भी विचार है । परन्तु इमाम शाफई का विचार यह है कि मुसलमान के द्वारा वध किया गया जानवर दोनों अवस्था में वैध है चाहे वह अल्लाह का नाम ले अथवा जानबूझ कर छोड़ दे तथा वह إنه لفسق को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर चढ़ाये गये बलि के जानवर के मांस के लिए मानते हैं ।

لِيُجَادِلُوكُمْ ۚ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

विवाद करें[1] तथा यदि तुमने उनका अनुसरण किया तो तुम निःसन्देह मिश्रणवादी हो जाओगे।

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा ऐसा व्यक्ति जो पहले मृत रहा फिर हमने उसे जीवित कर दिया और उसके लिये प्रकाश बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उसके समान हो सकता है जो अंधेरों में हो जिनसे निकल न सकता हो ?[2] ऐसे ही काफ़िरों (अधर्मियों) के लिये जो वे कर्म करते हैं सुशोभित बना दिये गये हैं।

---

[1]शैतान ने अपने साथियों के द्वारा इस बात का प्रचार किया कि यह मुसलमान अल्लाह के मारे हुए जानवर (अर्थात मृत) को तो अनुचित तथा अपने हाथों से काटे गये को उचित कहते हैं तथा दावा करते हैं कि हम अल्लाह के मानने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि शैतान तथा उसके मित्रों के प्रचार के पीछे मत लगो, जो जानवर मर गये अर्थात बिना अल्लाह का नाम लेकर काटे मर गये (समुद्री मृत जानवर के अतिरिक्त कि वह मृत भी हलाल है), चूँकि उस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया, इसलिए उसका खाना वैध नहीं।

[2]इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) तथा ईमानवालों को जीवित कहा है। इसलिए कि काफ़िर कुफ़्र के अपमान के अंधकार में भटकता फिरता है तथा उस से निकल ही नहीं पाता जिसका परिणाम मृत्यु तथा विनाश है तथा ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से जीवित रहता है, जिससे उसके जीवन के मार्ग प्रकाशमान हो जाते हैं। तथा वह ईमान तथा शुभ सूचना के मार्ग पर अग्रसर रहता है जिसका परिणाम सफलता व सम्मान है। यह वही विषय है जो निम्नलिखित आयतों में वर्णन किया गया है।

﴿ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴾ [البقرة: ٢٥٧]

﴿ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ﴾ [هود: ٢٤]

﴿ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ○ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ○ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ○ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴾ [فاطر: ١٩-٢٢]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَٰبِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती के महापापियों को षड़यन्त्र रचने के लिये बनाया ताकि उसमें षड़यन्त्र रचे[1] तथा वह अपने विरुद्ध ही षड़यन्त्र रचते हैं तथा इस का संवेदन नहीं कर पाते ।[2]

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब उनके पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कदापि विश्वास नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के समान न दी जाये जो ईशदूतों को दी गई ।[3] अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह अपना दूतत्व कहाँ रखे,[4] शीघ्र ही जो पाप किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से अपमानित होना है तथा जो षड़यन्त्र करते रहे उस का प्रतिकार घोर यातना है ।

---

[1] أكابر (मुखिया) أكبر का बहुवचन है, इसका तात्पर्य अनिष्ठों एवं दुराचारियों के प्रमुख हैं, क्योंकि ईशदूतों तथा सत्य के प्रचारकों के विरोध में वही आगे होते हैं, तथा साधारण लोग उनके अनुगामी होते हैं । इसलिये उनकी चर्चा विशेष रूप से की गई है, इसके अतिरिक्त सामान्यत: ऐसे लोग धन एवं वंश में भी बड़े होते है एवं प्रतापी होते हैं इस लिये सत्य के विरोध में भी अग्रगामी होते हैं । (इसी विषय की चर्चा *सूर: सबा* की आयत ३१ से ३३ तक तथा *सूर: जुखरुफ* आयत २३ एवं *सूर: नूह* की आयत २२, इत्यदि में भी की गई है)

[2]अर्थात उनके अपने कुकर्मों का पाप तथा उसी प्रकार उनके पीछे लगने वालों का पाप, उन्हीं पर पड़ेगा (इसके अतिरिक्त देखिये *सूर: अनकबूत*-१३ तथा *सूर: नहल*-२५)

[3]अर्थात उनके पास भी फरिश्ते वह्यी (प्रकाशनायें) ले कर आयें तथा उनके सिरों पर भी नबूवत तथा रिसालत का मुकुट रखा जाये ।

[4]अर्थात यह निर्णय करना कि किस को नबी बनाया जाये ? यह तो अल्लाह का कार्य है क्योंकि वही प्रत्येक बात के महत्व तथा विशेषता को जानता है तथा उसे ही ज्ञात है कि कौन इस पद का अधिकारी है ? मक्का का कोई चौधरी तथा धनवान अथवा आदरणीय अब्दुल्लाह तथा आदरणीया आमिना का अनाथ पुत्र ?

(१२५) जिन को अल्लाह सत्य मार्ग दिखाना चाहता है उस के वक्ष को इस्लाम (धर्म) के लिये खोल देता है तथा जिसे विपथ करना चाहता है उस के वक्ष को संकीर्ण तथा संकुचित कर देता है जैसे कि वह आकाश में चढ़ रहा हो ।[1] इसी प्रकार अल्लाह उनको घृणित बना देता है जो विश्वास नहीं रखते ।[2]

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ
صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ
يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا
كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ
يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

(१२६) यह तुम्हारे पालनहार का सीधा मार्ग है, हमने आयतों का विस्तृत वर्णन उस वर्ग के लिये कर दिया है जो शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾

(१२७) इन्हीं के लिये उनके पोषक के यहाँ शान्तिगृह है तथा वही उन के सदाचारों के कारण उन का मित्र है ।[3]

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

(१२८) तथा जिस दिन अल्लाह इन सभी को एकत्र करेगा (तथा कहेगा) हे जिन्नों के समूह ! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया[4] तथा

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

[1]अर्थात जिस प्रकार शक्ति लगाकर आकाश पर चढ़ना असम्भव है, उसी प्रकार से जिस व्यक्ति के सीने को अल्लाह तआला संकीर्ण कर दे उसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ईमान का प्रवेश सम्भव नहीं है उसके अतिरिक्त कि अल्लाह ही उसका सीना इसके लिए खोल दे ।

[2]अथवा शैतान को उनके ऊपर प्रभावशाली कर देता है ।

[3]अर्थात जिस प्रकार दुनिया में निष्ठावान लोग अविश्वास एवं गुमराही के टेढ़े मार्गों से वच कर निष्ठा तथा सीधे मार्ग पर अग्रसर रहते हैं, अब आख़िरत में भी उनके लिए सुरक्षा तथा शान्ति का घर है तथा अल्लाह तआला भी उनके पुण्य के कारण मित्र तथा सहायता करने वाला है ।

[4]अर्थात मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या को तुम ने भटका कर अपना अनुयायी बना लिया । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने सूरः यासीन में फ़रमाया, उसका अनुवाद यह है ।

أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَآ أَجَلَنَا الَّذِيٓ أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَآ إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

मानव में से उन के मित्र कहेंगे, हे हमारे पोषक हमें परस्पर लाभ पहुँचा ।[1] तथा हम तेरे निर्धारित समय को जो तूने हमारे लिये निर्धारित किया[2] जा पहुँचे । (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारा स्थान नरक है जिसमें तुम सदा वास करोगे, परन्तु जो अल्लाह चाहे,[3] निःसंदेह तुम्हारा स्वामी विज्ञानी ज्ञाता है ।

"हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें सतर्क नहीं कर दिया था कि तुम शैतान की पूजा न करो, वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है ? तथा यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा मार्ग है । एवं इस शैतान ने तुम्हारी बहुत बड़ी संख्या को भटका दिया है । क्या फिर भी तुम नहीं समझते ?" (*सूरः यासीन* : ६०-६२)

[1]जिन्नों ने तथा मनुष्यों ने एक-दूसरे से क्या लाभ प्राप्त किया ? इसके दो भावार्थों का वर्णन है । जिन्नों का मनुष्यों से लाभान्वित होना उन्हें अनुयायी बना कर उनसे मज़ा प्राप्त करना है तथा मनुष्यों का जिन्नों से लाभान्वित होने का अर्थ है कि शैतानों ने पाप को उनके लिए सुन्दर बना दिया जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा पाप के स्वाद में फंसे रहे । दूसरा भावार्थ यह है कि मनुष्य उन दैवी सूचनाओं की पुष्टि करते रहे, जो शैतान तथा जिन्नात की ओर से भविष्यवाणी के रूप में फैलायी जाती थीं । अर्थात यह जिन्नातों ने मनुष्यों को मूर्ख बनाकर लाभ प्राप्त किया तथा मनुष्यों का लाभ प्राप्त करना यह है कि मनुष्य जिन्नातों के द्वारा बतायी गयी झूठी तथा निराधार बातों से आनन्द लेते रहे तथा भविष्यवाणी करने वाले लोग उनसे सांसारिक लाभ प्राप्त करते रहे ।

[2]अर्थात क़ियामत घटित हो गयी, जिसे हम दुनिया में नहीं मानते थे । उसके उत्तर में अल्लाह तआला कहेगा कि अब नरक ही तुम्हारा स्थाई निवास स्थान है ।

[3]तथा अल्लाह का निर्णय काफ़िरों के लिए नरक की स्थाई यातना ही है जिसको उसने निरन्तर क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से वर्णित किया है । छूट से किसी प्रकार का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी इच्छा के आधार पर वर्णन किया है, इसे किसी अन्य चीज़ के साथ सम्मिलित नहीं किया जा सकता । इसलिए कि यदि वह काफिरों को नरक से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इससे वह विवश भी नहीं है तथा न कोई अन्य बाधक है । (ऐसरूत्तफ़ासीर)

(१२९) इसी प्रकार हम दुष्कर्मियों को उनके कुकर्मों के कारण परस्पर मित्र बना देते हैं ।[1]

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّىْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾

(१३०) हे जिन्नों तथा इन्सानों के समूह ! क्या तुम्हारे पास तुम में से ईशदूत नहीं आये,[2] जो तुम्हारे समक्ष हमारी आयतें पढ़ते रहे हों तथा तुम्हें इस (प्रलय) के दिन का सामना करने से सावधान करते रहे हों । वे कहेंगे कि हम अपने विरुद्ध साक्षी हैं, तथा सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखा दिया एवं अपने विरुद्ध साक्षी होंगे कि वह विश्वासहीन थे ।[3]

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِىْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

(१३१) (ईशदूत भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा पालनहार किसी गाँव वालों को किसी अत्याचार के कारण विनाश नहीं करता जब कि उस के निवासी अचेत हों ।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

---

[1]अर्थात नरक में, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है । दूसरा भावार्थ यह है कि जिस प्रकार से हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों को एक-दूसरे का मित्र तथा सहायक बनाया (जैसाकि पूर्व की आयत में गुज़र चुका है) उसी प्रकार हम अत्याचारियों के साथ व्यवहार करते हैं । एक अत्याचारी को दूसरे अत्याचारी पर प्रभावशाली बना देते हैं, इस प्रकार एक अत्याचारी दूसरे अत्याचारी का विनाश कर देता हैं । तथा एक अत्याचारी का बदला दूसरे अत्याचारी के द्वारा ले लेते हैं ।

[2]रिसालत तथा नबूवत के विषय में जिन्नात मनुष्यों के अधीन हैं, वरन् जिन्नातों में नबी नहीं आये हैं । परन्तु रसूलों के संदेशवाहक तथा शुभ सन्देश पहुँचाने वाले जिन्नातों में होते रहे हैं, जो अपने समुदाय के जिन्नों को अल्लाह की ओर आमन्त्रित करते रहे हैं ।

[3]प्रलय क्षेत्र में मिश्रणवादी (मुशरिक) अनेक पैंतरे बदलेंगे, कभी अपने मिश्रणवादी होने का इंकार करेंगे (अल अनाम,२३) और कभी स्वीकार किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी स्वीकृति का वर्णन किया गया है ।

(१३२) प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार विभिन्न श्रेणियाँ हैं तथा तुम्हारा स्वामी उन कर्मों से निश्चेत नहीं जो वह कर रहे हैं।

وَلِكُلٍّ دَرَجَٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا۟ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٢﴾

(१३३) तथा तुम्हारा पोषक निस्पृह दयानिधि है,[1] यदि चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे तथा तुम्हारे पश्चात् जिसे चाहे तुम्हारे स्थान पर रख दे जैसे तुम्हें एक अन्य वर्ग के वंश में पैदा किया है।[2]

وَرَبُّكَ ٱلْغَنِىُّ ذُو ٱلرَّحْمَةِ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنۢ بَعْدِكُم مَّا يَشَآءُ كَمَآ أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ ءَاخَرِينَ ﴿١٣٣﴾

(१३४) जिस वस्तु के लिए तुम को वचन दिया जाता है, वह नि:सन्देह आने वाली वस्तु है, तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते।[3]

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَءَاتٍ ۖ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿١٣٤﴾

(१३५) (आप) कहिये कि हे मेरे वर्ग ! तुम अपने स्थान पर अपना कर्म करते रहो, मैं भी (अपने स्थान पर) कार्यरत हूँ।[4] तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान

قُلْ يَٰقَوْمِ ٱعْمَلُوا۟ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّى عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ

[1]वह अपनी सृष्टि से निस्पृह है। उनका इच्छुक नहीं है तथा न उनकी अर्चना की उसको आवश्यकता है। उनकी निष्ठा न उसके लिए लाभकारी है न उनका अविश्वास उसके लिए हानिकारक है परन्तु अपनी इस निस्पृहता के गुण के साथ-साथ वह अपनी सृष्टि के लिए कृपालु है। उसकी निस्पृहता, अपनी सृष्टि पर कृपा करने में बाधक नहीं है।

[2]यह उसके अत्यधिक सामर्थ्य तथा असीम बल का प्रदर्शन है। जिस प्रकार से उसने पूर्व के समुदायों को मिटा कर दूसरे समुदायों को खड़ा किया, वह अब भी इस बात का सामर्थ्य रखता है कि तुम को नाश कर दे एवं तुम्हारे स्थान पर ऐसे समुदाय को पैदा कर दे जो तुम जैसा न हो। (अधिक जानकारी के लिए देखें *सूर: निसा*-१३३, *सूर: इब्राहीम*-२०, *सूर: फातिर*-१५ से १७, तथा *सूर: मोहम्मद*-३८)

[3]इससे तात्पर्य क़ियामत (प्रलय) है। "तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते" का अर्थ है कि वह तुम्हें पुन: जीवित करने का सामर्थ्य रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

[4]यह अविश्वास तथा अवज्ञा पर स्थिर रहने की आज्ञा नहीं है, अपितु कठोर चेतावनी है। जैसाकि अगले शब्दों से स्पष्ट है। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

हो जायेगा कि किस का अन्त इस जगत के बाद (उत्तम) होता है। निःसन्देह दुराचारी कदापि सफल नहीं होंगे।[1]

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ

(१३६) तथा अल्लाह ने जो कृषि एवं पशु उत्पन्न किये उन्होंने उन में से कुछ भाग अल्लाह का बना दिया तथा अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,[2] फिर जो हमारे देवताओं का (भाग) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता[3] तथा जो अल्लाह

﴿ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۖ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ﴾

"जो ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपने स्थान पर कर्म किये जाओ, हम भी कर्म कर रहे हैं तथा प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" (सूरः हूद-१२१,१२२)

[1]जैसाकि थोड़े समय पश्चात् अल्लाह तआला ने अपना वचन सत्य कर दिखाया। ८ हिजरी में मक्का विजय हो गया तथा उसकी विजय के पश्चात् अरब के गुट बहुत बड़ी संख्या में दिन प्रति दिन मुसलमान होना प्रारम्भ हो गये तथा पूरा अरब महाद्वीप मुसलमानों के अधीन आ गया। तथा यह सीमा फिर फैलती तथा बढ़ती ही गयी।

[2]इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस विश्वास तथा कर्म का उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है, जो उन्होंने स्वयं गढ़ लिये थे। वह कृषि की पैदावार तथा पशुओं में से कुछ भाग अल्लाह के लिए तथा कुछ भाग स्वयंकृत तथा कथित देवताओं के नाम पर निकाल देते थे। अल्लाह के भाग को अतिथियों, भिक्षुकों एवं सम्बन्धियों पर व्यय करते। फिर यदि मूर्तियों के भाग में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के भाग को निकाल कर उसमें सम्मिलित कर लेते तथा यदि उनके विपरीत घटित होता तो मूर्तियों के भाग से न निकालते तथा कहते कि अल्लाह तो निस्पृह है।

[3]अर्थात अल्लाह के भाग में कमी होने की परिस्थिति में मूर्तियों के भाग से निकाल कर दान तथा पुण्य का कार्य न करते।

إِلَىٰ شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾

का है वह उनके देवताओं तक पहुँचता है ।[1] वे बुरा निर्णय दे रहे हैं ।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) इसी प्रकार बहुत से मिश्रणवादियों (मूर्तिपूजकों) के लिये उनके देवताओं ने उनका विनाश करने एवं उन पर उनके धर्म को संदिग्ध[2] बनाने के लिये उन की संतान की हत्या को सुसज्जित बना दिया है ।[3] तथा यदि अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते ।[4] अत: आप इन को तथा इन के मन गढंत को त्याग दीजिये ।

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا

(१३८) तथा उन्होंने कहा कि यह पशु एवं कृषि निषेध है । इसे वही खायेगा अपने विचार से हम जिसे चाहेंगे[5] तथा कुछ पशु की पीठ

---

[1]यदि मूर्तियों के निर्धारित भाग में कमी होती तो वह अल्लाह के निर्धारित भाग में से लेकर मूर्तियों की आवश्यकताओं पर व्यय कर लेते । अर्थात अल्लाह के सापेक्ष मूर्तियों का भय उनके दिलों में अधिक था जिस का दर्शन आज के मूर्तिपूजकों के व्यवहार से भी किया जा सकता है ।

[2]अर्थात उनके धर्म में शिर्क को सम्मिलित कर दें ।

[3]यह संकेत उनकी बच्चियों (बालिकाओं) को जीवित गाड़ देने अथवा मूर्तियों को बलि स्वरूप भेंट चढ़ाने की ओर है ।

[4]अर्थात अल्लाह तआला अपने अधिकार शक्ति एवं सामर्थ्य के आधार पर उनके विचार तथा अधिकारों की स्वतन्त्रता को समाप्त कर देता, तो फिर नि:संदेह यह वह कार्य नहीं करते जो वर्णित हुए । परन्तु ऐसा करना चूंकि दबाव होता, जिसमें मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सकती थी, जबकि अल्लाह तआला मनुष्य को विचार तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान करके परीक्षा लेना चाहता है, इसलिए अल्लाह ने दबाव नहीं डाला ।

[5]इस में उन के मूर्खता काल के विधान तथा अनृत के तीन अन्य रूपों का वर्णन किया गया है (अर्थात निषेध) यद्यपि धातु है किन्तु कर्म अर्थात निषेधित के अर्थ में है, यह प्रथम रूप है कि पशु अथवा किसी खेत की पैदावार का प्रयोग निषेधित बना लेते थे तथा कहते

وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

(अर्थात सवारी) वर्जित है[1] तथा कुछ पशु पर (वध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह पर झूठ बाँधने के लिये,[2] अल्लाह उन्हें उनके आरोप का प्रतिकार शीघ्र देगा।

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾

(१३९) तथा उन्होंने कहा कि इन पशुओं के गर्भ में जो है वह विशेष रूप से हमारे पुरुषों के लिये है तथा हमारी पत्नियों पर निषेध है तथा यदि मृत हो तो सभी उसमें भागीदार हैं[3] वह (अल्लाह) उन के इस कथन का बदला शीघ्र देगा,[4] यथावत वह निपुण ज्ञाता है।

थे कि इसे वही खायेगा जिसे हम अनुमति देंगे। यह अनुमति मूर्तियों के सेवकों तथा पुरोहितों के लिये ही होती थी।

[1]यह दूसरा रूप है कि वह विभिन्न पशुओं को मूर्तियों के नाम पर मुक्त कर देते जिन से भारवाहन अथवा सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि “बहीरः ”तथा “साइबा ”आदि का सविस्तार विवरण पहले आ चुका है।

[2]यह तीसरा रूप है कि वह वध करते समय मात्र मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का भावार्थ यह लिया है कि इन पशुओं पर सवार होकर वह “हज” के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी स्वयं कृत बातें थीं जिन्हें वह अल्लाह का आदेश सिद्ध करना चाहते थे।

[3]यह एक अन्य रूप है कि जो पशु वह अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देते थे, इन में से कुछ के विषय में कहते थे कि इनका दूध तथा उनके गर्भ से जो जन्म जात जीवित बच्चा हमारे पुरुषों के लिए उचित है, स्त्रियों के लिए वर्जित है। हाँ यदि बच्चा मरा हुआ पैदा होता है, तो उसके खाने में स्त्री-पुरुष समान हैं।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह मिथ्यालाप करते हैं तथा अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं, उन पर शीघ्र अल्लाह तआला उन्हें दण्ड देगा। वह अपने निर्णय में पूर्ण सक्षम है। तथा अपने भक्तों के विषय में भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है तथा अपने ज्ञान तथा सामर्थ्य के अनुसार वह बदला तथा दण्ड का प्रबन्ध करेगा।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ حَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾

(१४०) वे हानि में पड़ गये जिन्होंने बिना ज्ञान के मूर्खता के कारण अपनी संतान को हत किया तथा अल्लाह ने जो जीविका प्रदान की उसे वर्जित कर लिया अल्लाह पर झूठ बांधने के कारण, वे विपथ हो गये तथा सत्य मार्ग पर नहीं रह गये।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾

(१४१) वही है जिसने लताओं तथा बिन लताओं के बाग़ात पैदा किये [1] तथा खजूर एवं खेतियाँ जिन के स्वाद विभिन्न प्रकार के हैं। तथा ज़ैतून तथा अनार समरूप तथा असम।[2] जब फल लायें तो तुम इनको खाओ तथा उसकी कटिया के दिन उसका देय अदा करो[3] तथा अपव्यय न करो।[4] निःसन्देह अल्लाह

---

[1] معروشات (मअरूशात) का धातु (अर्श) है, जिसका अर्थ उच्च करना तथा ऊपर उठाने के हैं तात्पर्य कुछ वृक्षों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों आदि) पर चढ़ाई जाती हैं। जैसे अंगूर तथा कुछ तरकारियों की लतायें हैं। परन्तु कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, अपितु धरती पर ही फलती-फूलती हैं। जैसे खरबूज़े तथा तरबूज़े आदि कि लतायें हैं। अथवा वह तने वाला वृक्ष है जो लता के रूप में नहीं होता। यह सभी लतायें, वृक्ष, तथा खजूर के वृक्ष एवं कृषि, जिनके स्वाद एक-दूसरे से भिन्न होते हैं तथा जैतून एवं अनार, सभी का पैदा करने वाला अल्लाह है।

[2] इसके लिए देखिए आयत संख्या ९९ की व्याख्या।

[3] अर्थात जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, तथा वृक्ष से फल तोड़ लो, तो उसका देय अदा करो। इस से तात्पर्य कुछ विद्वानों के निकट स्वेच्छा दान है कुछ के निकट अनिवार्य दान अर्थात दसवाँ भाग (तराई की भूमी की उपज हो) अथवा बीसवाँ भाग (यदि धरती कुऐं, ट्यूब वेल अथवा नहर के पानी से सींची जाती हो)

[4] अर्थात दान-पुण्य भी शक्ति से अधिक न करो, ऐसा न हो कि कल तुम्हें आवश्यकता न पड़ जाये, कुछ कहते हैं कि इसका सम्बन्ध अधिकारियों से है अर्थात दान तथा अनिवार्य धर्मदान की वसूली में सीमा का उल्लंघन न करो तथा इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत के शब्दों से स्पष्ट है तथा अधिक उचित यही है कि खाने में अधिक व्यय न करो

अपव्यय कारियों से प्रेम नहीं करता |[1]

(१४२) तथा पशुओं में कुछ बोझ लादने योग्य तथा कुछ धरती से लगे हुये बनाया |[2] खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है[3] तथा शैतान के पद् चिन्हों का अनुसरण न करो |[4] वस्तुत: वह तुम्हारा शत्रु है |

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٤٢﴾

(१४३) वह आठ प्रकार के जोड़े (बनाये)[5] भेंड़

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ

क्योंकि अधिक खाना शरीर तथा बुद्धि दोनो के लिए हानिकारक है | व्यय के ये सभी भाव अपने-अपने स्थान पर उचित हैं, इसलिए ये सारे भावार्थ का तात्पर्य हो सकता है |

[1]इसलिए अपव्यय किसी भी चीज में प्रिय नहीं है, दान-पुण्य के कार्य में अथवा अन्य किसी कार्य में | प्रत्येक कार्य में मध्यम तथा सीमा के भीतर शक्ति अनुसार उचित तथा प्रिय है और इसी पर बल दिया गया है |

[2] حَمُولَةً भारवाहक से तात्पर्य ऊंट, बैल, गधा तथा खच्चर आदि हैं | فرشا से तात्पर्य धरती से लगे पशु जैसे भेड़ बकरी, दुन्बा आदि है जिनके तुम दूध पीते हो अथवा माँस खाते हो |

[3]अर्थात फलों, अनाजों तथा पशुओं से, इन सभी को अल्लाह ने पैदा किया है और उनको तुम्हारे लिए भोजन बनाया है |

[4]जिस प्रकार से मूर्तिपूजक, इसके अनुगामी बन गये तथा अवर्जित पशु को भी अपने ऊपर वर्जित कर लिया अर्थात अल्लाह की उचित की हुई चीज़ को अनुचित तथा अनुचित को उचित करने में शैतान का अनुसरण कर रहे हैं |

[5]अर्थात 'उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये' | इस आयत में 'अज़्वाज' शब्द का प्रयोग हुआ है जो 'ज़ौज' का बहुवचन है | एक ही जाति के नर तथा मादा को 'ज़ौज' कहते हैं तथा उन दोनों में से प्रत्येक को भी 'ज़ौज' कह लिया जाता है क्योंकि प्रत्येक एक-दूसरे का 'ज़ौज' होता है | क़ुरआन में इस स्थान पर भी 'अज़्वाज' प्रत्येक के लिए ही प्रयोग हुआ है अर्थात आठ पशु अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं | यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस प्रकार से उनकी संख्या १६ हो जायेगी जो आयत के अगले भाग के अनुसार ठीक नहीं है |

وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤٣﴾

में दो बकरी में दो,[1] कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को वर्जित किया है अथवा दोंनो की मादा को ? अथवा उसको जो दोंनो मादा के गर्भाशय में सम्मिलित है ?[2] मुझे ज्ञान के साथ बताओ यदि सत्यवादी हो ।[3]

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ

(१४४) तथा ऊँट में दो तथा गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को अथवा दोनों नरों को ? अथवा उस को जिस पर दोनों मादा के गर्भाशय सम्मिलित हो । क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने इस का आदेश किया ?[4] फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये [5] ताकि बिना किसी

---

[1]यह आठ का पूरक है तथा तात्पर्य दो प्रकार से नर तथा मादा है अर्थात भेड़ से नर और मादा तथा बकरी से नर-मादा पैदा किये । (भेड़ में दुम्बा भी सम्मिलित है)

[2]मूर्तिपूजक स्वयं ही कुछ पशुओं को अपने ऊपर हराम कर लेते थे, उसके आधार पर अल्लाह तआला पूछ रहा है कि अल्लाह तआला ने उनके नरों को हराम किया अथवा मादाओं को अथवा उस बच्चे को जो दोनों मादाओं के गर्भ में हैं ? अर्थ यह है कि अल्लाह ने तो किसी को हराम नहीं किया है ।

[3]तुम्हारे पास हराम करने का कोई विश्वस्त प्रमाण है तो प्रस्तुत करो कि 'बहिरः', 'सायबा', 'बसीलः', तथा 'हाम' आदि इस प्रमाण के अनुसार हराम हैं ।

[4]अर्थात तुम जो कुछ पशुओं को हराम कह देते हो, क्या जब अल्लाह ने हराम का आदेश दिया था तो तुम उसके पास उपस्थित थे ? अर्थात अल्लाह ने इनको हराम करने का आदेश नहीं दिया । यह सब तुम्हारा झूठ है तथा अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हो ।

[5]अर्थात यही सबसे बड़ा अत्याचार है । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन लुही को नरक में आंत खींचते हुए देखा । उसने सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर वसीला तथा 'हाम' आदि पशु छोड़ने की श्रृंखला आरम्भ की । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः मायदः, मुस्लिम किताबुल जन्नः) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं यह अम्र बिन लुही, ख़ुज़ाआ क़बीले के सरदारों में से था, जोजुरहम क़बीले के पश्चात ख़ाना-ए-कआबा

اللهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾

ज्ञान लोगों को कुपथ बना दे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता।

قُل لَّآ أَجِدُ فِى مَآ أُوحِىَ إِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُۥٓ إِلَّآ أَن يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُۥ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِۦ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

(१४५) आप कहिये कि मुझे जो आदेश किया गया है उस में किसी भक्षी के लिये कोई खाद्य वर्जित नहीं पाता, परन्तु यह कि वह मृत हो अथवा बहता रक्त अथवा सूअर का मांस, इसलिये कि वह घृणित अपवित्र है अथवा जो अधर्मी हो जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो,[1] फिर जो कोई

का सरक्षक बना था। उसने सर्वप्रथम इब्राहीम के धर्म में परिवर्तन किया तथा हिजाज में मूर्तियाँ स्थापित करके लोगों को मूर्तिपूजा करने का आमन्त्रण दिया तथा मूर्ति के रीति-रीवाज को प्रचलित किया (इब्ने कसीर) अर्थात आयत का उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ने वर्णित उपरोक्त आठ प्रकार के पशु पैदा करके भक्तों पर उपकार किया है, उन में से कुछ को स्वयं निषेध कर लेना, अल्लाह के उपकार को अस्वीकार करना तथा शिर्क का कार्य है तथा इसका कर्ता मिश्रणवादी कहलायेगा।

[1]इस आयत में जिन चार वर्जित का वर्णन है उसका वर्णन सूर: बक़र: की आयत-१७३ की व्याख्या में विस्तारपूर्वक हो चुका है। यहाँ पर यह बिन्दु स्पष्ट करने योग्य है कि यहाँ पर इन चार अवैध को सीमा के रूप में वर्णित किया गया अर्थात इनके अतिरिक्त सभी उचित हैं। जब कि वास्तविकता यह है कि धार्मिक नियमों में इन चार के अतिरिक्त भी कई वर्जित हैं। फिर यहाँ सीमित क्यों किया गया ? बात वास्तव में यह है कि इससे पूर्व मूर्तिपूजकों के मूर्खता काल की रीतियों तथा उनके खण्डन का वर्णन हो रहा था। उन्हीं में कुछ पशुओं का वर्णन आया है, जो उन्होंने स्वयं अपने ऊपर वर्जित कर रखे थे। इस विषय में यह कहा जा रहा है कि मुझ पर जो प्रकाशनायें (वह्यी) के द्वारा विदित हो रहा है, उसमें यह वर्जित तो उचित हैं अर्थात वह वर्जित नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह ने जिन वर्जित का वर्णन किया है, उसमें ये सम्मिलित नहीं हैं। यदि वे निषेध होते तो अल्लाह तआला उनका वर्णन अवश्य करता। इमाम शौकानी ने इसको इस प्रकार स्पष्ट किया है कि यदि यह आयत मक्की (मक्के शहर में उतरी) न होती, तो अवश्य निषेध की यह सीमा स्वीकार की जा सकती थी, परन्तु चूँकि इसके पश्चात् स्वयं क़ुरआन ने *सूर: अल-मायद:* में कुछ अन्य अवैध का वर्णन किया है तो अब वह भी इनमें सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पशु-पक्षियों के हराम-हलाल का ज्ञान करने के दो

विवश हो, जब कि द्रोही तथा अतिक्रमणकारी न हो तो अल्लाह क्षमावान कृपा निधि है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) तथा हम ने यहूदियों पर नाख़ून वाले जानवर वर्जित कर दिये[1] तथा गाय एवं बकरी की वसा उन पर वर्जित कर दी, परन्तु जो दोनों की पीठ एवं आँतों में हो अथवा जो किसी अस्थि से लिपटी हो,[2] हमने यह उन के (धर्म) द्रोह का प्रतिकार दिया,[3] तथा हम सत्यवादी हैं।[4]

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ

(१४७) यदि वह आप को झुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे स्वामी (अल्लाह) की कृपा अति

नियम बतायें हैं व जिनका स्पष्टीकरण भी उपरोक्त वर्णित आयात की व्याख्या में उपस्थित है। أو فسقا का संबन्ध لحم خنزير से है इसलिए अर्थ है أي ذبح على الأصنام "वह पशु जो मूर्तियों के नाम पर अथवा उनके थानों पर उनकी निकटता प्राप्त करने के लिए बलि चढ़ायें जायें।" अर्थात ऐसे पशुओं को यद्यपि बलि चढ़ाते समय अल्लाह ही का नाम क्यों न लिया गया हो, तब भी वर्जित हैं, क्योंकि उनसे अल्लाह की निकटता नहीं, अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता प्राप्त करने का उद्देश्य है। फिस्क़ (भ्रष्टता) अल्लाह की आज्ञा पालन से निकलने का नाम है। प्रभु ने आदेश दिया है कि उस के नाम पर जानवर बलिदान किया जाये तथा उसी की निकटता, प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये किया जाये, यदि ऐसा नहीं किया जायेगा, तो अवज्ञा तथा मिश्रणवाद है।

[1]नखधारी से तात्पर्य बिना खुर फटे पशु तथा वह पक्षी हैं जिन की उँगलियाँ अलग-अलग न हों जैसे ऊँट, शुतुर्मुर्ग, बत्तख काज़ आदि। कुछ ने इस का अर्थ खुर वाले पशु एवं शिकारी पक्षी लिया है जो पंजे से शिकार करते हैं। (कुर्तबी)

[2]अर्थात जो वसा गाय अथवा बकरी की पीठ में हो अथवा दुम्बे की चक्की अथवा अंतड़ियों (अथवा ओझड़ी) या अस्थियों के साथ मिली हुई हो वसा की वह मात्रा उचित थी।

[3]यह चीजें हम ने दण्ड के रूप में उन पर वर्जित की थीं अर्थात यहूदियों का यह दावा कि यह आदरणीय याक़ूब ने अपने ऊपर निषेध कर ली थीं, तथा हम तो उनके अनुकरण में वर्जित समझते हैं, सही नहीं है।

[4]इसका अर्थ यह है कि यहूदी वस्तुत: अपने दावे में झूठे हैं।

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

विस्तृत है ।[1] तथा उस का कोप पापियों से फेरा नही जाता ।[2]

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

(१४८) मिश्रणवादी कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज मिश्रण नहीं करते, न किसी वस्तु को वर्जित बनाते ।[3] इसी प्रकार इनसे पूर्व के लोग झुठलाये यहाँ तक की हमारा कोप चख लिये,[4] कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तोउसे हमारे लिये निकालो (व्यक्त करो) ।[5] तुम कल्पना का अनुसरण करते हो तथा मात्र अनुमान लगाते हो ।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) आप कहिये कि फिर अल्लाह ही का तर्क प्रभावशाली है, अतः अगर वह चाहे तो तुम सभी को मार्गदर्शन दे सकता है ।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِن شَهِدُوا

(१५०) आप कहिये कि अपने उन साक्षियों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे

---

[1]इसलिए झुठलाने पर भी यातना देने में शीघ्रता नहीं करता ।

[2]अर्थात समय देने का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह की यातना से सदैव सुरक्षित हैं, वह जब भी यातना देने का निर्णय ले लेगा, तो उसे कोई टाल नहीं सकेगा ।

[3]यह वही भ्रम है जो अल्लाह की इच्छा एवं प्रसन्नता को एकार्थ समझ लेने के कारण होता है । यद्यपि यह एक-दूसरे से भिन्न है जिसको पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है ।

[4]अल्लाह तआला ने इस भ्रम का निराकरण इस प्रकार किया है कि यह शिर्क अल्लाह की प्रसन्नता का द्योतक था, तो फिर उन पर प्रकोप क्यों आया ? अल्लाह का प्रकोप इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की इच्छा अन्य बात है तथा अल्लाह की प्रसन्नता अन्य बात ।

[5]अर्थात अपने दावे के लिए कोई प्रमाण है तो प्रस्तुत करो । परन्तु उन के पास प्रमाण कहाँ ? वहाँ तो केवल कल्पना तथा भ्रम है ।

فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

निषेध किया है,[1] फिर यदि वह गवाही दें तो आप उनके साथ गवाही न दें [2] तथा उनकी मनमानी विचारों का अनुसरण न करें जिन्होंने हमारी आयतों को मिथ्या कहा तथा जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं करते तथा (अन्य को) अपने पोषक के समान मानते हैं।[3]

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا

(१५१) आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को अल्लाह ने किससे मना किया है।[4] वह ये कि उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो।[5] तथा माता-पिता के साथ उपकार

---

[1]अर्थात वह पशु जिनको मूर्तिपूजकों ने वर्जित बना दिया था।

[2]क्योंकि उनके पास केवल झूठ तथा मिथ्यारोपण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

[3]अर्थात उसके समान मान कर शिर्क (मिश्रण) करते हैं।

[4]अर्थात निषेध वह नहीं है जिन को तुम ने बिना धार्मिक प्रमाण के, मात्र अपने मिथ्या संदेह तथा शंका युक्त विचारों के आधार पर अवैध बना दिया है। अपितु अवैध तो वह वस्तु है जिस को तुम्हारे प्रभु ने वर्जित किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा पालनहार है तथा हर वस्तु का उसी को ही ज्ञान है। इसलिए उसी को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जिस चीज़ को चाहे हलाल (उचित) तथा जिस वस्तु को चाहे हराम (अनुचित) करे। अत: मैं तुम्हें उन बातों की विस्तृत जानकारी देता हूँ, जिनकी चेतावनी तुम्हारे प्रभु ने दी है।

[5] لا تشركوا से पूर्व أوصاكم इसमें निहित है। अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें इस बात का आदेश दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को तुम साझीदार मत बनाओ। शिर्क महापाप है, जिस के लिए क्षमा नहीं है, मुशरिक (मिश्रणवादी) पर स्वर्ग निषेध तथा नरक निश्चित है। क़ुरआन मजीद में सारी चीज़ों की विभिन्न रूप से पुनरावृति हुई है। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीस में इसका सविस्तार वर्णन किया है, इसके उपरान्त वास्तविकता यह है कि लोग शैतान के बहकाने में आकर शिर्क का सामान्य रूप से कार्य करते हैं।

أَوْلَادَكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

करो ।[1] तथा अपनी संतान को दरिद्रता के कारण हत न करो, हम तुम को तथा उनको जीविका प्रदान करते हैं ।[2] तथा व्यक्त एवं गुप्त अश्लीलता के निकट न जाओ तथा उस प्राण को जिससे अल्लाह ने मना किया है हत न करो परन्तु वैधानिक करण से ।[3] तुम को उसने इसी का निर्देश दिया है ताकि तुम समझो ।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ

(१५२) तथा अनाथ के माल के निकट न जाओ किन्तु अति उचित ढंग से यहाँ तक कि वह तरुण अवस्था को पहुंचे,[4] तथा न्याय के साथ

---

[1]अल्लाह तआला के एक होने तथा उसके आदेशों के पालन करने के उपरान्त यहाँ भी (तथा क़ुरआन में अन्य स्थान पर भी) माता-पिता के साथ दया-भाव का व्यवहार करने का आदेश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रभु के आदेशों के पालन के उपरान्त माता-पिता के आदेशों के पालन की बड़ी विशेषता है । यदि किसी ने इस उप-पालक (माता-पिता के आदेशों का पालन तथा उनसे दया भाव का व्यवहार करने) की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया तो वह महापोषक के आदेशों का पालन भी नहीं कर सकता अर्थात उसमें भी असफल रहेगा ।

[2]अज्ञानकाल का यह अत्यधिक कुरूप कार्य आज भी परिवार नियोजन के रूप में विद्यमान है तथा पूरे संसार में इस के प्रचार-प्रसार का कार्य हो रहा है । अल्लाह तआला इससे सुरक्षित रखे ।

[3]अर्थात बदले के रूप में न केवल उचित है, अपितु यदि मृतक के सम्बन्धी क्षमा न करें तो यह हत्या अति आवश्यक हो जाती है ।

﴿ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ ﴾

"प्रति हिंसा में तुम्हारा जीवन है ।" (*सूर: अल-बक़र:*-१७९)

[4]जिस अनाथ का संरक्षण तुम्हारे अधिकार में आये, उसके लिए अच्छा सोचना तुम्हारा अनिवार्य कर्तव्य है । इसकी भलाई के लिए आवश्यक है कि यदि उसके पास माल है अर्थात उत्तराधिकार में से उसका भाग मिला है चाहे नगद हो अथवा ज़मीन-जायदाद के रूप में, यदि उस समय वह उसको सुरक्षित रखने में सक्षम न हों तो उसके माल की उस समय तक निःस्वार्थ भाव से रक्षा की जाये जब तक कि वह वयस्क अवस्था को न पहुँच

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾

माप एवं तौल पूरा करो,[1] हम किसी पर उस की शक्ति से अधिक भार नहीं रखते,[2] तथा जब बोलो तो न्याय करो यद्यपि वह निकट संबंधी हो तथा अल्लाह से किया वचन पूरा करो, उसने तुम लोगों को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम स्मरण करो।

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

(१५३) तथा यही मेरा सीधा मार्ग,[3] है अत: उसी का आचरण करो।[4] तथा अन्य पथों पर

जाये। यह न हो कि उसके वयस्क होने से पूर्व उसके माल, जमीन तथा जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

[1]माप-तौल में कमी करना, लेते समय तो पूरा माप-तौल से लेना, परन्तु देते समय ऐसा न करना, अपितु डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह अत्यधिक नीच तथा सभ्यता से गिरी हुई बात है। आदरणीय शुऐब के समुदाय में यही रोग था, जो उनके विनाश का कारण बना।

[2]यहाँ इस बात के वर्णन का यह उद्देश्य है कि जिन बातों से हम तुम्हें सावधान कर रहे हैं, यह नहीं कि इन को कार्यान्वित न किया जा सके अथवा कठिन हो। यदि ऐसा होता तो हम इसका आदेश ही न करते। इसलिए हम किसी को उसकी शक्ति से अधिक करने का आदेश ही नहीं देते। इसलिए यदि आख़िरत में मोक्ष तथा संसार में सम्मान चाहते हो तो, अल्लाह के इन आदेशों के अनुसार कर्म करो तथा उन से आनाकानी न करो।

[3]'यह' से तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अथवा इस्लाम धर्म अथवा वे आदेश जो विशेषता से इस आयत में वर्णन किये गये हैं। तथा वह है एकेश्वरवाद, मरणोपरान्त के परिणाम तथा रिसालत। तथा यही इस्लाम धर्म के तीन मूलाधार हैं, जिसकी धुरी पर पूरे धार्मिक नियम घूमते हैं। इसलिए इसका जो भी अर्थ लिया जाये, एक ही भाव है।

[4]"सीधे मार्ग" को एकवचन के रूप में वर्णन किया गया है, क्योंकि अल्लाह का अथवा क़ुरआन का, तथा रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एक ही है। एक से अधिक नहीं। इसलिए अनुकरण मात्र उसी एक मार्ग का करना है। किसी अन्य का नहीं। यही इस्लामी समुदाय की एकता तथा अखण्डता की आधारशिला है जिस से हटकर यह समुदाय विभिन्न गुटों में बंट गया है। यद्यपि इसको चेतावनी दी गयी थी कि "दूसरे मार्ग पर मत चलो कि वह मार्ग तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे।" अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

تَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

न चलो अन्यथा तुम्हें उस के मार्ग से विचलित कर देंगे, उसने तुम को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम सुरक्षित रहो।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝

(१५४) फिर हम ने (ईशदूत) मूसा को उस पर कृपा पूरी करने के लिये जिस ने सदाचार किया तथा प्रत्येक विषय के विवरण एवं मार्गदर्शन तथा दया के लिये धर्मशास्त्र (तौरात) प्रदान किया[1] ताकि वे अपने पोषक से मिलने पर विश्वास करें।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

(१५५) तथा यह (पवित्र क़ुरआन) एक शुभ शास्त्र[2] है जिसे हम ने उतारा, अतः तुम इस

﴿أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ﴾

"धर्म को स्थापित करो तथा इसमें फूट न डालो।" (*सूरः अश-शूरा-१३*)

अर्थात फूट तथा भेद की कदापि आज्ञा नहीं है। इसी बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से हदीस में वर्णन किया कि अपने हाथ से एक सरल रेखा खींची तथा फ़रमाया कि "यह अल्लाह का सीधा मार्ग है।" तथा कुछ अन्य रेखायें उसके दाहिने तथा बायें खींची तथा फ़रमाया "ये मार्ग हैं जिन पर शैतान बैठा हुआ है तथा वह उनकी ओर लोगों को बुलाता है।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी जो व्याख्या के लिए प्रस्तुत है (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ ४६५,४३५, अहमद शाकिर ने इसे सहीह कहा है। देखिये मुसनद अहमद बतालीक अहमद शाकिर संख्या ४१४२) अपितु इब्ने माजा के कथन में इससे अधिक स्पष्टीकरण होता है कि आप ने दाहिने-बायें दो-दो रेखायें खींची अर्थात कुल चार रेखायें खींची। तथा उन्हें शैतान का मार्ग बताया।

[1]यह पवित्र क़ुरआन की अपनी शैली है कि जिसे अनेक स्थानों पर दोहराया गया है, कि जहाँ पवित्र क़ुरआन की चर्चा होती है वहाँ (तौरात) की तथा जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पवित्र क़ुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है। इसके अनेक उदाहरण, हाफ़िज इब्ने कसीर ने प्रस्तुत किये हैं, यहाँ इसी शैली के अनुसार तौरात तथा उसके इस गुण का वर्णन है कि वह भी अपने युग में एक परिपूर्ण धर्मग्रन्थ थी, जिसमें उनके धर्म की सभी आवश्यक बातें सविस्तार वर्णित थीं, तथा मार्गदर्शन एवं दया का स्रोत थी।

[2]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जिस में लोक-परलोक के शुभ तथा लाभ सीमित हैं।

का अनुसरण करो ताकि तुम पर दाया की जाये।

أَن تَقُولُوا إِنَّمَا أُنزِلَ الْكِتَٰبُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَٰفِلِينَ ١٥٦

(१५६) ताकि यह न कहो[1] कि हम से पूर्व दो समुदायों पर धर्मशास्त्र (तौरात तथा इंजील) उतारी गई तथा हम उनके अध्ययन से अंजान रहे।[2]

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَٰبُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِآيَٰتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَٰتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ١٥٧

(१५७) अथवा तुम यह न कहो कि यदि हम पर धर्मशास्त्र अवतरित होता तो हम उन से अधिक सत्य मार्ग पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से स्पष्ट तर्क एवं मार्गदर्शन तथा दया आ चुकी है,[3] फिर उससे अधिक पापी कौन है जिसने अल्लाह की आयतों को मिथ्या कहा तथा उन से फिर गया,[4] हम घोर यातना अपनी आयतों से फिरने के कारण उन्हें देंगे जो फेर रहे हैं।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَٰئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ

(१५८) वह फ़रिश्तों (सुरों) के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं अथवा अपने स्वामी (अल्लाह) के आने की अथवा आप के पालनहार की कुछ

---

[1]अर्थात यह क़ुरआन इसलिए उतारा ताकि तुम यह न कहो। दो सम्प्रदायों से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं।

[2]इसलिए कि वह हमारी भाषा में न थी। अतएव इस बहाने को समाप्त करने के लिए क़ुरआन अरबी भाषा में उतार दिया।

[3]अर्थात यह बहाना भी तुम नहीं बना सकते।

[4]अर्थात मार्गदर्शक तथा कृपा फल धर्मशास्त्र के उतरने के पश्चात अब जो व्यक्ति मार्ग दर्शन (इस्लाम) का मार्ग अपना कर अल्लाह की कृपा का पात्र नहीं बनता अपितु झुठलाने तथा विमुखता को अपनाता है, तो उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? (सदफ़) का अर्थ विमुख होना तथा "दूसरों को रोकना" भी किया गया है।

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا

निशानी (लक्षण) आने की ?[1] जिस दिन तुम्हारे पोषक की ओर से चिन्ह आ जायेंगे किसी प्राणी को उसका विश्वास काम न देगा जिस ने उससे पूर्व विश्वास न किया हो[2] अथवा अपने विश्वास में कोई शुभ कर्म न किया हो,[3]

---

[1]क़ुरआन मजीद को उतारकर तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) के द्वारा तर्क प्रमाणित कर दिया है। परन्तु अब भी यह कुमार्ग से नहीं रुकते तो क्या ये इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके पास फ़रिश्ते (यमदूत) आयें अर्थात उनके प्राण निकालने के लिए तो उस समय विश्वास करेंगे ? अथवा आप का प्रभु उनके पास आये अर्थात प्रलय हो जाये तथा ये अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत किये जायें। उस समय ईमान लायेंगे। अथवा आपके प्रभु की बड़ी निशानी आये। जैसे प्रलय के निकट सूर्य का पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय होना। तो इस प्रकार की बड़ी निशानी देख कर विश्वास करेंगे ? अगले वाक्य में इसको स्पष्ट किया जा रहा है कि यदि वे इस प्रकार की प्रतीक्षा में हैं, तो बहुत बड़ी मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हैं। क्योंकि बड़े लक्षण के प्रकट होने के पश्चात अनिष्ठ की निष्ठा तथा कुकर्मी एवं अत्याचारी की क्षमा-याचना स्वीकार नहीं होगी। सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "प्रलय नहीं होगी, जब तक कि सूर्य (पूर्व के विपरीत) पश्चिम से उदय न हो, बस जब ऐसा होगा तथा लोग उसे पश्चिम से उदय होते देखेंगे, तो सब ईमान ले आयेंगे।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी।

﴿لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ﴾

"उस समय ईमान लाना किसी को लाभकारी नहीं होगा, जो इससे पूर्व ईमान न लाया होगा।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर अल-अनाम)

[2]अर्थात काफ़िरों का ईमान न लाभकारी होगा न स्वीकार होगा।

[3]इसका अर्थ है कि यदि कोई पापी ईमान वाला अपने पापों की क्षमा-याचना करेगा तो उसकी याचना स्वीकार न होगी तथा उसके पश्चात् पुण्य कार्य अस्वीकार होगा जैसाकि हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है।

إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

आप कहिये कि तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) प्रतीक्षा कर रहे हैं ।[1]

إِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ إِنَّمَآ أَمْرُهُمْ إِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

(१५९) नि:सन्देह जिन्होंने अपना धर्म विभाजित कर दिया तथा अनेक धार्मिक सम्प्रदाय बन गये[2] आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उनका निर्णय अल्लाह के पास है फिर उन्हें उससे सूचित करेगा जो वह करते रहे हैं ।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) जो व्यक्ति पुण्य कार्य करेगा उसे उसके दस गुना मिलेंगे ।[3] तथा जो कुकर्म करेगा उसे उसके समान दण्ड मिलगा ।[4] तथा उन लोगों पर अत्याचार न होगा ।

---

[1]यह ईमान न लाने वालों तथा याचना न करने वालों के लिए चेतावनी है तथा सावधान किया जा रहा है । क़ुरआन करीम में यही विषय *सूर: मोहम्मद*-१८ तथा *सूर: मोमिन*-८४ तथा ८५ में वर्णन किया गया है ।

[2]इससे कुछ लोग यहूदी तथा ईसाई तात्पर्य लेते हैं, जो विभिन्न गुटों में बँटे हुए थे । कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिनमें कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ विभिन्न मूर्तियों की पूजा करते थे । परन्तु यह विषय सामान्य है जिनमें काफ़िर तथा मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी सम्मिलित हैं जो अल्लाह के धर्म तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग को छोड़ कर दूसरे धर्म अपना कर अन्य मार्ग अपनाकर भेद तथा फूट का मार्ग अपनाते हैं । شيعا का अर्थ है गुट तथा गिरोह तथा यह बात सभी उन समुदायों पर सत्य होती है जो धर्म के विषय में एक मत थे, परन्तु बाद में उनके विभिन्न लोगों ने अपने किसी बड़े के विचार को अन्तिम शब्द सिद्ध करके अपना मार्ग अलग कर लिया, चाहे वह मार्ग सत्य तथा पुण्य से विहीन ही हो । (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह अल्लाह तआला की कृपा तथा उपकार का वर्णन है जो वह ईमानवालों (आस्तिकों) के साथ करेगा कि एक पुण्य का बदला दस पुण्य के समान प्रदान करेगा । यह कम से कम परिणाम है, वरन् क़ुरआन तथा हदीस दोनों से सिद्ध है कि कुछ पुण्यों का बदला कई सौ गुना, अपितु हज़ारों तथा लाखों गुना तक मिलेगा ।

[4]अर्थात जिन पापों का दण्ड निर्धारित नहीं है, तथा उसके करने के पश्चात् उससे क्षमा भी नहीं माँगी अथवा उसके पुण्य उसके पापों से अधिक न हों, अथवा अल्लाह तआला ने

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

(१६१) (आप) कह दीजिए कि मुझे मेरे प्रभु ने एक सीधा मार्ग बता दिया है कि जो शाश्वत धर्म है इब्राहीम का (जो अल्लाह के अन्य से वियोगी थे) तथा वह मिश्रणवादियों में न थे।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) (आप) कह दीजिए कि नि:सन्देह मेरी नमाज़, तथा मेरी समस्त आराधनायें तथा समस्त जीवन तथा मृत्यु सर्वलोक के पोषक अल्लाह के लिए हैं।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) उसका कोई साक्षी नहीं मुझे इसी का आदेश दिया गया है तथा मैं प्रथम हूँ जिन्होंने उस के प्रति आत्म समर्पण किये।[1]

अपनी विशेष कृपा से उसे क्षमा नहीं किया हो (क्योंकि इन सभी अवस्थाओं में सांकेतिक दण्ड की परिधि में नहीं आयेगा) तो फिर अल्लाह तआला ऐसी बुराई का दण्ड देगा, तथा उसके समान ही देगा।

[1]इस अद्वैत का आमन्त्रण सभी ईशदूतों ने दिया। जैसे यहाँ अन्तिम ईशदूत (नराशंस) के मुखारविन्द से कहलवाया गया कि मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सर्वप्रथम इसे मानता हूँ। अन्य स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया कि हमने आप से पूर्व जितने भी अम्बिया (ईशदूत भेजे उन्हें यही आदेश दिया कि मेरे सिवाय कोई पूज्य नहीं। अत: मेरी ही आराधना करो। (*अल-अम्बिया*-२५) इसी प्रकार ईशदूत नूह ने भी यही घोषणा की।

﴿وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

"मुझे यह आदेश दिया गया है कि अल्लाह के प्रति आत्मसमर्पण कारियों में प्रथम बनूँ।" (*सूर: यूनुस*-७२)

आदरणीय इब्राहीम के विषय में आता है कि जब अल्लाह ने उनसे कहा कि स्वयं को मेरे प्रति समर्पित कर दो तोउन्होंने कहा कि मैंने विश्व विधाता के प्रति आत्म समर्पण कर दिया। (*सूर: बक़र:*-१३१) आदरणीय इब्राहीम तथा याक़ूब ने अपने पुत्रों को यही अन्तिम आदेश दिया कि तुम्हारा अन्त इस्लाम धर्म पर होना चाहिए। आदरणीय यूसुफ़ ने प्रार्थना की।

﴿تَوَفَّنِي مُسْلِمًا﴾

"मुझे इस्लाम की स्थिति में संसार से उठाना।" (*सूर: यूसुफ़*-१०१)

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी अन्य स्वामी की खोज करूँ जब कि वही सब का स्वामी है [1] तथा कोई प्राणी जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा,[2] फिर तुम्हें तुम्हारे पोषक की ओर पुन: जाना है वह तुम्हारे विभेदों के विषय में तुम्हें बतायेगा ।[3]

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ

(१६५) तथा उसी ने तुम को धरती में उत्तराधिकारी[4] बनाया तथा एक के पदों को

आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय से कहा ।

﴿فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ﴾

"यदि तुम मुसलमान हो तो उसी अल्लाह पर भरोसा करो ।" (सूर: *यूनुस*-८४)

आदरणीय ईसा ने अपने साथियों से सूर: अल-मायद:-१११ में कहा ﴿وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ﴾ इसी प्रकार अन्य नबियों ने भी तथा उनके सद्भावक अनुयायियों ने भी उसी इस्लाम का अनुकरण किया जिसमें एक अल्लाह की उपासना को मूलाधार स्थिति प्राप्त है यद्यपि कि वह धार्मिक नियम एक-दूसरे से भिन्न थे ।

[1]यहाँ पोषक से तात्पर्य पूज्य बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इंकार करते रहे हैं, तथा जो उसके पोषक होने की माँग है । परन्तु मूर्तिपूजक उसके पोषक होने को तो मानते थे तथा उसमें किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, परन्तु पूजित होने में साझीदार ठहराते थे ।

[2]अर्थात अल्लाह तआला न्याय का पूर्ण प्रबन्ध करेगा तथा जिसने अच्छा अथवा बुरा जैसा कर्म किया होगा उसकी उसी के अनुसार सम्मान तथा दण्ड देगा तथा एक का बोझ दूसरे पर नहीं डालेगा ।

[3]अत: यदि तुम इस अद्वैत को नहीं मानते जो सभी ईशदूतों कि एक मात्र शिक्षा रही है तो फिर तुम अपना काम करो हम अपना कर रहे हैं । प्रलय के पश्चात अल्लाह के सदन में हमारे तुम्हारे बीच निर्णय होगा ।

[4]अर्थात अधिकारी बनाकर अधिकारों से अलंकृत किया अथवा एक के पश्चात दूसरे को उसका उत्तराधिकारी बनाया ।

لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَآ اٰتٰىكُمْ ط اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें प्रदान किया उसमें तुम्हारी परीक्षा ले[1] निःसंदेह तुम्हारा स्वामी शीघ्र यातना देने वाला है तथा वस्तुतः वह क्षमाशील दयानिधि है।

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ

सूरतुल आराफ़-७

सूरः अल-आराफ़ मक्का में उतरी तथा इसकी दो सौ छः आयतें हैं तथा चौबीस रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ जो अत्यधिक कृपालु तथा अति दयालु है।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰ लाँम॰ मीम॰ स्वाद।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

(२) एक धर्मशास्त्र आप की ओर उतारा गया ताकि इस के द्वारा सावधान करने से आप के दिल में संकीर्णता उत्पन्न न हो[2] तथा ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

(३) जो (धर्म विधान) आप के पोषक की ओर से उतारा गया[3] उसका अनुसरण करो तथा

---

[1]अर्थात दरिद्रता, धन, ज्ञान, अज्ञानता तथा स्वास्थ एवं रोग जिसको जो कुछ प्रदान किया है उसी में उसका उत्तराधिकारी बनाया।

[2]अर्थात इसके प्रचार से आप का मन संकुचित न हो कि कहीं नास्तिक मुझ पर मिथ्यारोपण न करें तथा मुझे कष्ट न पहुँचायें। इसलिए कि अल्लाह आपका रक्षक तथा सहायक है। अथवा حرج (हर्जुन) शंका के अर्थ में है अर्थात इसके अल्लाह की ओर से उतरने में आप के मन में दुविधा नहीं होनी चाहिए। यह अन्योक्ति है तथा वास्तव में आप के अनुयायियों को संबोधित किया गया है कि संदेह न करें।

[3]जो अल्लाह की ओर से उतारा गया है अर्थात पवित्र क़ुरआन एवं जो अन्तिम ईशदूत का कथन है अर्थात (हदीस) क्योंकि आप ने कहा कि मैं पवित्र ईशवाणी क़ुरआन एवं उसके समान दिया गया हूँ, इन दोनों का अनुसरण अनिवार्य है। इनके सिवाय किसी अन्य का अनुसरण अनिवार्य नहीं अपितु उन का इंकार अनिवार्य है जैसाकि आगामी वाक्य में कहा

وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ③

उसके सिवाये अन्य सहायकों का अनुसरण न करो तुम लोग बहुत कम शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَكَم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ④

(४) तथा बहुत-सी बस्तियों को हमने नष्ट कर दिया तथा उन पर हमारा प्रकोप रात्रि समय पहुँचा अथवा ऐसी अवस्था में कि वे मध्यान्ह के समय विश्राम कर रहे थे।[1]

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا إِلَّا أَن قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ⑤

(५) तो जब उनके पास हमारा प्रकोप आया तो उनकी पुकार मात्र यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही अत्याचारी (पापी) रहे हैं।[2]

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ⑥

(६) फिर हम उन से अवश्य पूछ करेंगे जिन के पास उपदेश भेजा गया तथा उपदेशकों से अवश्य पूछ करेंगे।[3]

है कि अल्लाह को छोड़ अन्य किसी का अनुसरण न करो जिस प्रकार मूर्खता काल में प्रमुखों एवं ज्योतिषियों की बात को महत्व दिया जाता था यहाँ तक कि वैध-अवैध के विषय में उन्हीं की बात मानी जाती थी।

[1] قيلولة शब्द "मध्यान्ह के समय भोजन करके विश्राम करने को कहते हैं।" अर्थ यह है कि हमारा प्रकोप सहसा ऐसे समय में आया जब वे निश्चिन्त रूप से अपने बिस्तरों पर विश्राम कर रहे थे।

[2]परन्तु प्रकोप आ जाने पर ऐसे स्वीकार का कोई लाभ नहीं। जैसे कि पूर्व स्पष्ट किया जा चुका है।

﴿ فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ﴾

"जब उन्होंने हमारा प्रकोप देख लिया तो उस समय उनका ईमान लाना उनके लिए लाभकारी नहीं हुआ।" (सूरः *अल-मोमिन*-८५)

[3]समुदायों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर (संदेशवाहक) आये थे ? उन्होंने हमारा संदेश पहुँचाया था ? वहाँ वे उत्तर देंगे, "हाँ, हे अल्लाह ! तेरे पैग़म्बर तो अवश्य हमारे पास आये थे परन्तु हमारा ही दुर्भाग्य था कि हमने उनकी चिन्ता नहीं की।" तथा

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَآئِبِينَ ۝٧

(७) फिर हम उनके समक्ष ज्ञान के साथ वर्णन कर देंगे[1] एवं हम अनभिज्ञ नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٨

(८) तथा उस दिन सत्य तुलना होगी फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही सफल होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝٩

(९) तथा जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपनी हानि कर ली इस कारण कि हमारी निशानियों का हनन करते रहे थे।[2]

पैग़म्बरों से पूछा जायेगा कि तुमने हमारे संदेश अपने समुदाय को पहुँचा दिये तथा उन्होंने उसकी तुलना में क्या कर्म किये? पैग़म्बर इस प्रश्न का उत्तर देंगे जिसका विस्तृत वर्णन पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर विद्यमान है।

[1]हम सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष का ज्ञान रखते हैं अत: हम दोनों (वर्गों एवं संदेशवाहकों) के सामने सभी बातें रख देंगे, तथा उन्होंने जो कुछ किया होगा उनके आगे प्रस्तुत कर देंगे।

[2]इन आयतों में कर्मों के तौलने का वर्णन किया गया है, जो प्रलय के दिन होगा, जिसे पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर तथा हदीसों में वर्णन किया गया है। जिसका अर्थ यह है कि तुला में कर्म तौले जायेंगे, जिसके पुण्य का पलड़ा भारी होगा वह सफल तथा जिसकी बुराईयों का पलड़ा भारी होगा वह असफल होगा। ये कर्म किस प्रकार तौले जायेंगे जब कि वास्तव में इनका भौतिक स्वरूप नहीं है? इसमें एक विचार यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला स्वयं कर्म-कर्ताओं को भौतिक स्वरूप में बदल देगा तथा उनकी तौल होगी। दूसरा विचार यह है कि कर्मपत्र तौला जायेगा जिन पर यह कर्म लिखे होंगे। तीसरा विचार यह है कि इन कर्मों के कर्ता को तौला जायेगा। तीनों विचारों वालों के पास अपने विचार के पक्ष में सहीह हदीस तथा कथन उपलब्ध हैं, इसलिए इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि तीनों विचार ही उचित हैं, सम्भव है कि कभी कर्म, कभी कर्मपत्र तथा कभी स्वयं कर्म के कर्ता को तौला जायेगा (तर्क के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर) तुला तथा कर्मों के तौल का विषय क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत है। इसका इंकार अथवा कष्ट कल्पना भटकाव है, तथा वर्तमान युग में हम ने देख लिया कि अब तो बिना भार की वस्तुएं जिन्हें हम समझते थे तथा ऐसा विचार था कि इन का भार नहीं निकाला जा सकता उनका भी भार ज्ञात करने की विधि तथा साधन उपलब्ध हैं, तो अल्लाह तआला के लिए कर्मों को तौलना कदापि असम्भव नहीं है क्योंकि उसे हर प्रकार का सामर्थ्य है।

وَلَقَدْ مَكَّنَّٰكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَٰيِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा हमने तुम को पृथ्वी में अधिकार सहित स्थान दिया तथा उस में तुम्हारे लिये जीवन सामग्री बनाई, तुम अति अल्प कृतज्ञ हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿١١﴾

(११) तथा हमने तुमको पैदा किया फिर तुम्हारा रूप बनाया [1] फिर सुरों (फ़रिश्तों) से कहा कि आदम को सजदा करो तो सभी ने सजदा किया सिवाय इब्लीस के कि वह सजदा करने वालों में सम्मिलित नहीं हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِى مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُۥ مِن طِينٍ ﴿١٢﴾

(१२) (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुझे सजदा करने का आदेश दिया तो किस कारण ने तुझे सजदा करने से रोक दिया,[2] उसने कहा मैं इससे उत्तम हूँ तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया तथा इसे मिट्टी से पैदा किया है।[3]

---

[1] خلقناكم का अर्थ है तुम सभी को पैदा किया। इसमें तुम सब सर्वनाम यद्यपि बहुवचन है किन्तु इस से तात्पर्य आदरणीय आदम हैं।

[2] ألا تسجد में ٧ अधिक है अर्थात أن تسجد (तुझे सिजदा करने से किस ने रोका ?) अथवा यहाँ वाक्य का लोप है अर्थात "तुझे किस विषय ने वाध्य किया कि सिजदा न करे।" (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)। शैतान फ़रिश्तों में से नहीं था, अपितु क़ुरआन के स्वयं स्पष्टीकरण के अनुसार वह जिन्नात था। (*सूरः अल-कहफ़-५०*) परन्तु आकाश पर फ़रिश्तों के साथ रहने के कारण वह सिजदा के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य था, जो अल्लाह ने फ़रिश्तों को दिया था। इसी कारण उस से पूछा भी गया तथा उस पर प्रकोप भी हुआ। यदि वह आदेश में सम्मिलित ही न होता, तो उससे पूछ न होती तथा वह धिक्कारा न जाता।

[3] शैतान की यह क्षमा-याचना उसके पाप से भी गम्भीर पाप बन गई। एक तो उसका यह सोचना कि श्रेष्ठ को अपने से नीचे के आदर तथा सम्मान का आदेश नहीं दिया जा सकता, ग़लत है। इसलिए कि मूल विषय अल्लाह का आदेश है, उसके आदेश के आगे श्रेष्ठ अथवा निम्न की बात करना अल्लाह के आदेश की अवहेलना है। दूसरे उसने अपने श्रेष्ठ होने का तर्क यह दिया कि मैं अग्नि से हूँ तथा यह मिट्टी से है। परन्तु उसने उस श्रेष्ठता को अनदेखी कर दिया जो आदरणीय आदम को प्राप्त हुई अर्थात अल्लाह तआला ने स्वयं अपने हाथ से बनाया तथा अपनी ओर से आत्मा फूँकी। इस श्रेष्ठता के समान दुनिया का

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّٰغِرِينَ ⑬

(१३) (अल्लाह तआला ने) आदेश दिया कि तू आकाश[1] से उतर तुझे कोई अधिकार नहीं कि आकाश में निवास करके घमंड करे। इसलिए निकल, निःसन्देह तू अपमानितों में से है।[2]

قَالَ أَنظِرْنِيٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ⑭

(१४) उस (शैतान) ने कहा कि मुझे (प्रलय तक) अवसर प्रदान कर दें जब लोग पुनर्जीवित किये जायेंगे।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ⑮

(१५) (अल्लाह) ने कहा कि तुझे अवसर प्रदान कर दिया गया।[3]

कोई सम्मान हो सकता है ? तृतीय, उसने स्वयं आदेश के आगे अनुमान से काम लिया ? जो किसी भी अल्लाह के भक्त का आचरण नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त उसका अनुमान भी भ्रष्ट अनुमान था। अग्नि, मिट्टी से किस प्रकार श्रेष्ठ हो सकती है ? अग्नि में उत्तेजना, तथा भड़कने एवं जलने के सिवाय है क्या ? जबकि मिट्टी में शान्ति तथा स्थिरता है। इसमें फलने-फूलने अधिकता तथा सुधार की विशेषता है। ये गुण अग्नि से प्रत्येक प्रकार से श्रेष्ठ तथा अधिक लाभकारी है। इस आयत से यह ज्ञात हुआ कि शैतान की उत्पत्ति अग्नि से हुई। जैसाकि हदीस में भी आता है "फ़रिश्ते प्रकाश से, इब्लीस अग्नि की लौ से तथा आदम मिट्टी से पैदा किये गये हैं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, वाब अहादीसे मुतफ़र्रिक़ः)

[1]अधिकांश व्याख्याकारों ने "इससे" का अर्थ यह किया है कि उससे अर्थात स्वर्ग से निकल जाओ और कुछ ने "इस" से का अर्थ यह लिया है कि आकाश लोक से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा अर्थ लेकर उसका अनुवाद "आकाश से उतरो" किया है।

[2]अल्लाह के आदेश के समक्ष घमण्ड करने वाला आदर तथा सम्मान का नहीं अपितु अनादर तथा अपमान का अधिकारी होता है।

[3]अल्लाह ने उसकी आग्रह पर यह अवसर दे दिया जो उसके ज्ञान तथा इच्छानुसार था, फिर भी इससे बात समझ में आती है कि उसने ऐसा इसलिए किया कि अपने भक्तों की परीक्षा ले सके कि कौन उसका भक्त बनता है और कौन शैतान का पुजारी।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِىْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿١٦﴾

(१६) उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के कारण[1] मैं उन के लिये तेरे सत्यमार्ग पर बैठूँगा।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर उनके सामने तथा पीछे से एवं दायें तथा बायें से आक्रमण करूँगा।[2] तथा आप इनमें अधिकतर को कृतज्ञ नहीं पायेंगे।[3]

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

(१८) (अल्लाह) ने कहा, तू इससे (यहाँ से) अपमानित बहिष्कृत होकर निकल जा, जो उनमें से तेरा अनुसरण करेगा मैं तुम सभी से नरक कोअवश्य भर दूँगा।

وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا

(१९) तथा (हम ने कहा कि) हे आदम! तुम तथा तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में निवास करो, फिर

---

[1]कुमार्ग तो वह अल्लाह की सृष्टि उत्पत्ति की इच्छा के अनुसार हुआ, परन्तु उसने भी मूर्तिपूजकों की भांति लांछन बना लिया, जिस प्रकार वह कहते थे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते।

[2]अर्थ यह है कि प्रत्येक पुण्य तथा पाप के मार्ग पर मैं बैठूँगा। पुण्य से उन्हें रोकूँगा तथा पाप को उनके समक्ष सुन्दर तथा आकर्षित बना कर प्रस्तुत करूँगा तथा उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूँगा।

[3]शाकेरीन का दूसरा अनुवाद एक अल्लाह के मानने वाले भी किया गया है। अर्थात अधिकतर लोगों को मैं शिर्क में लिप्त कर दूँगा। शैतान ने अपना यह विचार वास्तव में सत्य कर दिखाया।

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

"शैतान ने अपना विचार सत्य कर दिखाया, मोमिनों के एक गुट को छोड़ कर सभी लोग उस के पीछे लग गये।" (*सूरः सबा*-२०)

इसीलिए हदीस में शैतान से बचने के लिए तथा क़ुरआन में उसके छल, कपट तथा जाल से बचने के लिए बड़ी चेतावनी दी गयी है।

هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ⑲

जिस स्थान से इच्छा हो खाओ एवं इस वृक्ष के निकट न जाओ अन्यथा अत्याचारी हो जाओगे |[1]

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ⑳

(२०) फिर शैतान ने दोनों में शंका[2] उत्पन्न की ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों[3] को प्रकट कर दे तथा कहा कि तुम दोनों के पोषक ने तुम्हें इस वृक्ष से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फ़रिश्ता हो जाओगे अथवा अमर हो जाओगे |

وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ ㉑

(२१) उसने उन दोनों के समक्ष शपथ ली कि वह उनका शुभ चिन्तक है |[4]

---

[1]अर्थात मात्र इस वृक्ष के सिवाये जहाँ से तथा जितना चाहो खाओ | इस वृक्ष का फल खाने पर प्रतिबन्ध मात्र परीक्षा के रूप में था |

[2]वसवसा का अर्थ है धीमा स्वर तथा वह बुरी बात जो शैतान मन में उत्पन्न करता है |

[3]अर्थात इस बहकाने से शैतान का लक्ष्य आदम तथा हव्वा को स्वर्ग के वस्त्र से वंचित करके उन्हें लज्जित करना था जो उन्हें स्वर्ग में पहनने को मिले थे | سوأت बहुवचन है जिस का अर्थ बुरा लगना है तथा उस का अर्थ गुप्तांग इसलिये लिया जाता है कि इसके खुल जाने को बुरा माना जाता है |

[4]स्वर्ग में जो सुख सुविधायें आदरणीय आदम तथा हव्वा को उपलब्ध थीं उसके द्वारा शैतान ने दोनों को प्रलोभन दिया तथा यह झूठ बोला कि अल्लाह तुम्हें सदा स्वर्ग में रखना नहीं चाहता है, इसीलिए इस वृक्ष का फल खाने से मना किया है क्योंकि इसका प्रभाव ही यही है कि जो उसे खा लेता है, वह फ़रिश्ता बन जाता है अथवा उसे स्थाई जीवन प्राप्त हो जाता है | फिर सौगन्ध खाकर अपने को शुभचिन्तक सिद्ध किया, जिससे आदरणीय आदम तथा हव्वा प्रभावित हो गये, इस लिए कि अल्लाह वाले अल्लाह के नाम पर धोखा खा जाते हैं |

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

(२२) इस प्रकार धोखे से दोनों को नीचे लाया,[1] जैसे ही दोनों ने वृक्ष का स्वाद लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग प्रकट हो गये तथा वे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे [2] तथा उन के स्वामी ने दोनों को पुकारा कि क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से नहीं रोका ? तथा तुम से नहीं कहा कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है ।[3]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٜ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) दोनों ने कहा, हमारे पोषक ! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया तथा यदि तूने हमें क्षमा नहीं किया तथा हम पर दया न की तो हम क्षतिग्रस्तों में से हो जायेंगे ।[4]

---

[1] تدلية و إدلاء अरबी शब्द का अर्थ है किसी वस्तु को ऊपर से नीचे ले जाना । अत: शैतान उनको उच्च पद से उतार कर निषेधित वृक्ष का फल खाने तक ले गया ।

[2]यह उस अवज्ञा का प्रभाव हुआ जो आदम तथा हव्वा से अनजान तथा बिना सोच-विचार के हुई । फिर दोनों लज्जित होकर स्वर्ग के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने गुप्तांगों को ढांकने लगे । वहब बिन मुनब्बा कहते हैं कि उससे पूर्व उनको अल्लाह तआला की ओर से एक ऐसा प्रकाशमान वस्त्र मिला था जो यद्यपि अदृश्य था फिर भी एक-दूसरे के गुप्तांगों के लिये आवरण (पर्दे) का काम देता था । (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात इस चेतावनी के पश्चात् भी तुम शैतान के वसवसों (शंका) के शिकार हो गये । इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े आकर्षित होते हैं, तथा उनसे बचने के लिए बड़े प्रयत्न तथा हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है ।

[4]क्षमा-याचना के यह वही वाक्य हैं जो आदरणीय आदम ने अल्लाह तआला से सीखे, जैसाकि सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ३७ में स्पष्टरूप से आया है (देखिए वर्णित आयत की व्याख्या) । ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान ने अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना ही नहीं की, अपितु वह अड़ भी गया तथा अपने काल्पनिक तथा अनुमानित तर्कों के द्वारा उसको उचित भी ठहराता रहा । परिणाम स्वरूप तिरस्कृत किया गया तथा सदा के लिए धिक्कारा गया तथा आदरणीय आदम अपनी भूल को स्वीकार कर क्षमा-याचना करने लगे, तो अल्लाह की कृपा तथा क्षमा के अधिकारी हो गये । इस प्रकार दोनों प्रकार के

(२४) अल्लाह (तआला) ने कहा, तुम नीचे उतरो, तुम परस्पर शत्रु हो तथा तुम्हें एक समय तक धरती में निवास करना एवं लाभान्वित होना है।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾

(२५) कहा कि तुम उसी में जीवन यापन करोगे तथा उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२६) हे आदम के पुत्रो ! हम ने तुम्हें ऐसा वस्त्र प्रदान किया जो तुम्हारे गुप्तांग को ढांके तथा शोभा दे[1] एवं संयम (परहेजगारी) का वस्त्र [2] ही उत्तम है[3] यह अल्लाह के लक्षण हैं ताकि वह स्मरण करें।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

मार्गों का स्पष्टीकरण हो गया। अर्थात शैतान के मार्ग का भी तथा अल्लाह वालों के मार्ग का भी। पाप करके घमण्ड करना उनकी पुनरावृत्ति करके उसको उचित सिद्ध करने के लिए तर्कों का ढेर लगाना शैतानी मार्ग है। तथा पाप के पश्चात् लज्जित होकर अल्लाह के दरबार में झुक जाना तथा क्षमा-याचना करना अल्लाह के भक्तों का मार्ग है। اللهم اجعلنا منهم

[1] سوآت शरीर के वह अंग हैं जिनको ढांकना आवश्यक है, जैसे गुप्तांग तथा ريشا वह वस्त्र है जो शोभा एवं सुन्दरता के लिये पहना जाये मानो प्रथम आवश्यक वस्त्र है एवं दूसरा पूर्ति एवं अधिकता के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों प्रकार के लिये संसाधन उत्पन्न कर दिये।

[2]इससे तात्पर्य कुछ लोगों के विचार से वह वस्त्र है जो संयमी प्रलय के दिन ग्रहण करेंगे, तथा कुछ के निकट निष्ठा एवं कुछ के विचार से सत्कर्म तथा अल्लाह का भय है, सब का भावार्थ लगभग एक ही है कि ऐसा वस्त्र जिसे धारण करके मनुष्य अहंकार के बजाय अल्लाह से डरे तथा विश्वास एवं सत्कर्म की माँगों को पूरा करे।

[3]इससे यह भाव निकलता है कि यद्यिप शोभा तथा सौंदर्य के लिय वस्त्र पहनना उचित है फिर भी वस्त्र में ऐसी सादगी अतिप्रिय है जो पवित्रता तथा संयम का द्योतक हो। इसके सिवाये नया वस्त्र धारण करते समय, यह प्रार्थना की जाये।

يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ لَا يَفۡتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ كَمَآ أَخۡرَجَ أَبَوَيۡكُم مِّنَ ٱلۡجَنَّةِ يَنزِعُ عَنۡهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوۡءَٰتِهِمَآۚ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمۡ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنۡ حَيۡثُ لَا تَرَوۡنَهُمۡۗ إِنَّا جَعَلۡنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوۡلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ ٢٧

(२७) हे आदम के पुत्रो ! तुम्हें शैतान बहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकलवा दिया, वह उन का वस्त्र उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, नि:सन्देह वह तथा उस की जन जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,[1] हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया जो ईमान (विश्वास)[2] नहीं रखते।

وَإِذَا فَعَلُواْ فَٰحِشَةٗ قَالُواْ وَجَدۡنَا عَلَيۡهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَاۗ قُلۡ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأۡمُرُ بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ

(२८) तथा वे जब कोई दुराचार करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी पर पाया तथा अल्लाह ने हमें इसका आदेश दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह दुराचार का

«اَلْحَمْدُ للهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي».

"सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे ऐसा वस्त्र पहनाया जिससे मैं अपना गुप्तांग छुपाऊँ और अपने जीवन में उस से शोभा प्राप्त करूँ।"

(त्रिमज़ी, प्रार्थना अध्याय-इब्ने माजा, वस्त्र अध्याय, मनुष्य नया वस्त्र धारण करते समय क्या प्रार्थना करे)

[1]इसमें ईमानवालों को शैतान तथा उसकी जाति अर्थात उसके शिष्यों से सावधान किया गया है कि कहीं तुम्हारी असावधानी तथा आलस्य से लाभ उठा कर तुम्हें भी उसी प्रकार परीक्षा तथा कुमार्ग में न डाल दे, जिस प्रकार तुम्हारे माता-पिता (आदम तथा हव्वा) को उसने स्वर्ग से निकलवाया तथा स्वर्ग के वस्त्र उतरवा दिये। विशेषरूप से जब वह दृष्टि गोचर नहीं होते तो उनसे बचने की व्यवस्था तथा चिन्ता अधिक होनी चाहिए।

[2]अर्थात जिनमें ईमान नहीं है वही उसके मित्र हैं तथा विशेषरूप से उसके शिकार होते हैं। फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है। कुछ और नहीं तो गुप्त शिर्क (दिखावे के पुण्य) तथा प्रत्यक्ष शिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है तथा इस प्रकार वह उनको ईमान के पूँजी से वंचित कर देता है।

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

आदेश नहीं करता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।[1]

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) आप (नराशंस) कहिये कि मेरे पोषक ने मुझे न्याय का आदेश दिया है।[2] तथा प्रत्येक सजदा के समय अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो[3] तथा उस (अल्लाह) के लिये धर्म को स्वच्छ करके उसे पुकारो। उसने जैसे

---

[1]इस्लाम से पूर्व मूर्तिपूजक बैतुल्लाह (काअबा) की परिक्रमा नंगे होकर करते थे तथा कहते थे कि हम उस अवस्था के अनुसार परिक्रमा करते हैं जो उस समय थी जब हमारी माताओं ने हमें जन्मा था। कुछ कहते हैं कि वे कहते थे कि हम जो वस्त्र पहनते हैं उसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते रहते हैं, इसलिए इस वस्त्र में परिक्रमा करना उचित नहीं। अत: वह वस्त्र उतारकर परिक्रमा करते तथा स्त्रियाँ भी नंगी परिक्रमा करती थीं, केवल अपने गुप्तांग पर कोई कपड़ा अथवा चमड़ा रख लिया करती थीं। अपने इस अपमानित कर्म के लिए दो तर्क और दिये। एक तो यह कि हमने अपने पूर्वजों को इस प्रकार ही करते पाया। दूसरे यह कि अल्लाह ने हमको इसका आदेश दिया है। अल्लाह ने इसका खण्डन किया कि यह किस प्रकार हो सकता है कि अल्लाह तआला अभद्र असभ्य कार्यों का आदेश दे ? अर्थात तुम अल्लाह के ऊपर उस बात को लगाते हो जिसका उसने आदेश नहीं दिया। इस आयत में उन अनुकरणवादियों को सचेत तथा सतर्क किया गया है जो अपने पूर्वजों, महात्माओं तथा महान व्यक्तियों का पालन करते हैं, जब उन्हें भी सत्य बात बतायी जाती है, तो वह भी उसके समक्ष यही तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हमारे बड़े भी यही करते आये हैं अथवा हमारे इमाम तथा पीर का यही आदेश है। यह वह व्यवहार है कि यहूदी अपनी यहूदियत पर, इसाई अपने ईसाईयत पर तथा परिवर्तनकारी अपने परिवर्तित रस्मों पर दृढ़ हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]न्याय का भावार्थ कुछ ने لا إله إلا الله अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) लिया है।

[3]इमाम शौकानी ने इसका अर्थ यह वर्णित किया है कि "अपनी नमाज़ों में अपना मुख क़िबले की ओर कर लो, चाहे तुम किसी भी मस्जिद में हो।" तथा इमाम इब्ने कसीर ने इससे दृढ़ता अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण का भाव लिया है तथा अगले वाक्य से अल्लाह के लिये सुद्ध होना लिया है। तथा कहा है कि प्रत्येक कर्म की स्वीकृति के लिए आवश्यक है कि वह धार्मिक नियमों के अनुसार हो तथा अन्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो। आयत में इन बातों पर बल दिया गया है।

तुम को प्रारम्भ में पैदा किया उसी प्रकार पुन: जन्म लोगे।

(३०) तथा उस (अल्लाह) ने कुछ को मार्गदर्शन किया और कुछ कुपथ के पात्र बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना मित्र बना लिया तथा सोचते हैं कि वह पथगामी हैं।

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَٰلَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

(३१) हे आदम के पुत्रो ! मस्जिद में जाने के प्रत्येक समय अपना वस्त्र अपना लो[1] तथा खाओ-पिओ और अपव्यय न करो। नि:सन्देह जो अपव्यय करते हैं अल्लाह उनसे प्रेम नहीं करता।[2]

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوٓا ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

(३२) (हे ईशदूत !) आप कहिये कि उस शोभा को किस ने वर्जित किया है जिसे अल्लाह ने अपने भक्तों के लिये उत्पन्न किया है तथा पवित्र जीविका को, आप कहिये कि वह भौतिक जीवन में उन लोगों के लिये है जिन्होंने विश्वास किया (तथा) विशेष रूप से

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِىٓ أَخْرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَالطَّيِّبَٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِىَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا فِى الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

---

[1]आयत में शोभा से तात्पर्य वस्त्र है। इसका सम्बन्ध भी मूर्तिपूजकों के नंगे परिक्रमा से है, अत: उन्हें कहा गया कि वस्त्र धारण करके अल्लाह की इबादत करो।

[2]अपव्यय (सीमा से पार होना) किसी भी विषय में यहाँ तक कि खाद्य तथा पेय में भी प्रिय नहीं माना गया है। एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो। परन्तु दो बातों से बचो अपव्यय तथा अहंकार से।" सहीह बुख़ारी किताबुल लिबास बाब क़ौल अल्लाह तआला क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्लाह ......) कुछ सलफ़ का कथन है। كلوا و اشربوا ولا تسرفوا इस आधी आयत में सारी चिकित्सा पद्धति एकत्रित कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

अन्त दिवस में उन्हीं के लिये हैं।[1] हम आयतों का इसी प्रकार विस्तृत वर्णन कर रहे हैं उनके लिये जो ज्ञान रखते हैं।

(३३) आप कहिये कि मेरे पोषक ने सभी व्यक्त एवं गुप्त अशिष्ट विषय[2] को वर्जित किया है तथा पाप एवं अनुचित अतिक्रमण को [3] तथा

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ

[1]मुर्तिपूजकों ने जिस प्रकार परिक्रमा के समय वस्त्र धारण करना अप्रिय माना था इसी प्रकार कुछ उचित पदार्थों को भी अल्लाह के सामिप्य के लिये वर्जित कर लिया था जैसे कि कुछ सूफ़िया (साधु) भी ऐसा ही करते हैं तथा बहुत-सी वैध वस्तुयें अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देने हेतु अवैध मान लेते थे। अल्लाह ने कहा कि जिन पदार्थों को उसने लोगों की शोभा के लिए (उदाहरणार्थ वस्त्रादि एवं) स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बनाये हैं उन्हें कौन निषेधित कर सकता है। इस का अभिप्राय यह है कि अल्लाह की उचित बनाई हुई वस्तुयें किसी के वर्जित करने से वर्जित नहीं हो जाती हैं, वह उचित ही रहेंगी, यह उचित एवं पवित्र वस्तुयें अल्लाह ने वास्तव में अपने भक्तों के लिये बनाई हैं। नास्तिक मूर्तिपूजक भी इन से लाभान्वित होते हैं अपितु कभी संसारिक सुख-सुविधा में वह मुसलमानों से अधिक सफल दिखाई देते हैं। किन्तु यह सामयिक तथा अस्थिर सुख है, जिस के भेद को अल्लाह ही जानता है परन्तु परलोक में यह अनुकम्पायें मुसलमानों के लिए ही होंगी क्योंकि कृतघ्नों के लिये जिस प्रकार स्वर्ग निषेधित होगा उसी प्रकार यह खाद्य तथा पेय भी निषेधित होंगे।

[2]प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य कुछ के यहाँ वेश्या के कोठे पर जाकर व्यभिचार करना तथा गुप्त कुकर्म से तात्पर्य किसी प्रेमिका से विशेष सम्बन्ध स्थापित करना है। कुछ के निकट प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य निकट निषेधित स्त्रियों से विवाह करना (जो वर्जित है) लिया गया है। परन्तु उचित बात तो यह है कि यह किसी एक विशेष परिस्थिति से सम्बन्धित नहीं है, अपितु सामान्य है। जैसे फिल्में, ड्रामे, नाटक टी॰ वी, वी॰सी॰आर, अभद्र-असभ्य समाचार एवं पत्र-पत्रिकायें, नृत्य, मदीरा पान, नृत्यांगनाओं की पुरुषों के समक्ष नृत्य तथा पुरुष-स्त्री मिश्रण, मेंहदी तथा विवाह के रीति रीवाज में सामान्यतया जो प्रदर्शन होता है आदि यह सभी कुकर्म हैं। أعاذنا الله منها

[3]पाप, अल्लाह की अवज्ञा का नाम है। तथा एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "पाप वह है जो तेरे सीने में खटके , तथा लोगों को इसकी सूचना हो जाने पर तू बुरा समझे।"(सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र) तथा कुछ लोग कहते हैं कि पाप वह है जिस का प्रभाव, करने वाले तक सीमित हो तथा بغي (बग़्य) वह है कि इसके प्रभाव

تُشْرِكُوا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

अल्लाह के साथ उसे मिश्रित करने को जिसका उसने कोई तर्क नहीं उतारा तथा अल्लाह पर अज्ञात बातें बोलने को।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा प्रत्येक समुदाय का एक निर्धारित समय है[1] फिर जब उनका निश्चित समय आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सवेर।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे आदम के पुत्रो ! यदि तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे समक्ष मेरी आयतों का वर्णन करें तो जो संयम बरतेगा तथा सुधार कर लेगा उन्हीं पर न कोई भय होगा और न दु:खी होंगे।[2]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जिन्होंने हमारे आदेशों को नकारा। एवं उनसे अहंकार किया वही नरकीय हैं वही उसमें सदा रहेंगे।[3]

दूसरों तक भी पहुँचें। यहाँ बग़ी के साथ अनावश्यक का अर्थ, अनावश्यक अत्याचार तथा कठोरता जैसे लोगों के अधिकारों का हनन करना, किसी का माल छीन लेना, अनावश्यक मारना-पीटना तथा बुरा-भला एवं कटुवचन कह कर अपमानित करना आदि है।

[1]निर्धारित समय से तात्पर्य वह अवसर है जो अल्लाह (परमेश्वर) प्रत्येक के परीक्षा के लिये देता है कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर अल्लाह को प्रसन्न करने का प्रयास करता है अथवा उसके विद्रोह एवं दुष्टता में और अधिकता होती है। यह अवसर कभी आजीवन होता है अर्थात संसारिक जीवन में वह नहीं पकड़ता अपितु परलोक ही में दण्ड देगा, इन का निर्धारित समय प्रलय दिवस ही है तथा जिन को संसार में दण्डित कर देता है उन का निर्धारित समय वह है जब उन्हें पकड़ लेता है।

[2]यह उन लोगों के सुपरिणाम का वर्णन है, जो संयम तथा सत्कर्म से सुशोभित होंगे। क़ुरआन ने ईमान के साथ अधिकतर स्थान पर पुण्य के कार्यों का वर्णन अवश्य किया है, जिससे ज्ञात होता है कि अल्लाह के समक्ष वही ईमान मान्य है जिसके साथ पुण्य के कार्य भी होंगे।

[3]इसमें ईमानवालों के विपरीत उन लोगों के कुपरिणामों का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह के आदेशों को झुठलाते हैं तथा उनके समक्ष घमण्ड करते हैं। ईमानवालों तथा

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा अथवा उस की आयतों (आदेशों) को झुठला दिया, इन को किताब से निर्धारित भाग पहुँचेगा [1] यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे फ़रिश्ते (यमदूत) उन के प्राण निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे, वे कहेंगे हम से खो गये तथा अपने काफ़िर (अधर्मी) होने को स्वयं स्वीकार कर लेंगे।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ

(३८) वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों तथा इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पूर्व गुजर गये[2] नरक में प्रवेश कर जाओ, जब कोई गिरोह प्रवेश करेगा तो दूसरे को धिक्कार

काफ़िरों दोनों के परिणाम का वर्णन करने का उद्देश्य यह है कि लोग उस व्यवहार को अपनायें जिसका परिणाम अच्छा है तथा उस व्यवहार से बचें जिसका परिणाम बुरा है।

[1]इसके विभिन्न भावार्थ वर्णन किये गये हैं। एव अर्थ कर्म, जीविका तथा आयु के किया गया है। अर्थात उनके भाग्य में जो कर्म तथा जीविका है, उसे पूरा कर लेने तथा जितनी आयु है, उसे व्यतीत कर लेने के पश्चात् अन्ततः मृत्यु को गले लगाना होगा। उसके समान यह आयत है।

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۞ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ﴾

"जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं, वह सफल नहीं होंगे, संसार का क्षणिक लाभ उठाकर, अन्ततः हमारे पास उन्हें लौटकर आना है।" (*सूरः यूनुस* -६९ ,७०)

[2]उमम, उम्मत का बहुवचन है। तात्पर्य वह वर्ग तथा समुदाय है, जो अविश्वास एवं विरोध तथा बहुदेववाद तथा अनिष्ठा में एक समान होंगें। في का अर्थ सहित भी हो सकता है अर्थात तुम से पूर्व मनुष्यों तथा जिन्नों में जो गिरोह तुम जैसे यहाँ आ चुके हैं, उनके साथ नरक में प्रवेश करो अथवा उन में सम्मिलित हो जाओ।

أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

करेगा[1] यहाँ तक कि जब उस (नरक) में सभी एकत्र हो जायेंगे [2] तो उन के अनुगामी अपने अग्रगामियों के विषय में कहेंगे[3] कि हे हमारे पालनहार, इन्हों ने ही हम को विपथ बनाया तू इन्हें नरक का दुगना दंड दे ।[4] (अल्लाह) कहेगा कि प्रत्येक के लिये दुगना है[5] परन्तु तुम नहीं जानते ।

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ

(३९) तथा आगामी अपने अनुगामियों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं, अत:

---

[1] ﴿لَعَنَتْ أُخْتَهَا﴾ का अर्थ है अपने समान दूसरे गुट को धिक्कारेगी । "उख्त" अरबी भाषा में बहन को कहते हैं । एक गिरोह (समुदाय) को दूसरे गिरोह (समुदाय) की बहन धर्म के आधार पर अथवा भटकाव के कारण कहा गया है । अर्थात दोनों ही एक असत्य धर्म के अनुयायी थे अथवा भटके थे अथवा नरक के साथी होने के कारण उनको एक-दूसरे की बहन कहा गया है ।

[2] اِدّارَكُوا का अर्थ है تَدَارَكُوا जब एक-दूसरे से मिलेंगे तथा एकत्रित होंगे ।

[3] أخرى (पिछले) से तात्पर्य बाद में प्रवेश करने वाले तथा أُولى से तात्पर्य उनसे पूर्व प्रवेश होने वाले हैं । अथवा पिछलों से अनुकरण तथा पूर्व से नेतृत्व करने वाले मुखिया का तात्पर्य है । उनका अपराध अत्यधिक है क्योंकि वे स्वयं सत्यमार्ग से दूर रहे तथा दूसरों को भी प्रयत्न करके दूर रखा, इसलिए वह अपने अनुसरण करने वाले से पहले नरक में जायेंगे ।

[4] जिस प्रकार से एक-दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया है । नरकवासी कहेंगे ।

﴿رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۞ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا﴾

"हे हमारे प्रभु ! हम तो अपने प्रमुखों तथा पूर्वजों के अनुगामी हैं, अत: उन्होंने हमें सीधे मार्ग से भटका दिया, हे मेरे प्रभु ! इनको दुगुना प्रकोप (यातना) दे तथा उन पर बड़ी धिक्कार कर ।" (*सूर: अल-अहज़ाब*-६७,६८)

[5] अर्थात अब एक-दूसरे को धिक्कारने तथा कोसने से कोई लाभ नहीं, तुम सभी अपने-अपने स्थान पर अपराधी थे, तुम सभी दुगुने दण्ड के अधिकारी हो । नेताओं तथा अनुगामियों का यह संवाद सूर: *सबा*-३१ तथा ३२ में भी वर्णन किया गया है ।

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾ ع

तुम भी अपने कर्मों के कारण यातना का स्वाद लो।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:सन्देह जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उन से अहंकार किया उनके लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे[1] तथा वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में प्रवेश न कर जाये[2] तथा हम पापियों को इसी प्रकार प्रतिकार देते हैं।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

(४१) उनके लिए नरक की अग्नि का बिस्तर होगा तथा उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा,[3] तथा हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा जो विश्वास एवं सदाचार किये हम किसी प्राण को उसकी शक्ति अनुसार ही उत्तरदायी बनाते हैं,[4] यही स्वर्गीय हैं यही उसमें सदा वास करेंगे।

---

[1]इसका भावार्थ कुछ ने कर्म, कुछ ने प्राण तथा कुछ ने विनय लिया है अर्थात उन के कर्मों अथवा प्राणों अथवा विनय के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे अर्थात कर्म तथा विनय स्वीकार नहीं की जाती तथा प्राण धरती की ओर लौटा दिये जाते हैं जैसा कि मुसनद अहमद भाग-२, पृ॰ ३६४, ३६५) की एक हदीस से भी विदित होता है। प्रकांड विद्वान इमाम शौकानी कहते हैं तीनों भावार्थ लिये जा सकते हैं।

[2]यह असम्भव बात है। जिस प्रकार ऊँट का सुई के छिद्र से पार होना असम्भव है उसी प्रकार काफ़िरों का स्वर्ग में प्रवेश असम्भव है।

[3] غـــواش शब्द غاشية का बहुवचन है, जिसका अर्थ है "ढक लेने वाली" अर्थात आग ही उनका ओढ़ना होगा अर्थात ऊपर से भी आग ढांक लेगी।

[4]यह प्रासंगिक वाक्य है जिसका उद्देश्य यह बताना है कि ईमान तथा सत्कर्म, ये ऐसी चीज़ें नहीं है जो मनुष्य की शक्ति से अधिक हों तथा मनुष्य इनको करने की शक्ति न रखता

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ

(४३) तथा हम उनके दिलों के कपट का निवारण कर देंगे[1] उन के नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी। और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी प्रशंसा है जिसने हमें इस के मार्ग पर लगाया यदि वह मार्गदर्शन न कराता तो हम स्वयं मार्ग पर नहीं लगते।[2] सचमुच हमारे

हो। अपितु प्रत्येक मनुष्य सरलता से इनको अपना सकता है तथा उनकी आवश्यकताओं अथवा माँगों को पूरा कर सकता है।

[1] غـل उस ईर्ष्या को कहते हैं जो हृदय में दबी हो। अल्लाह तआला स्वर्ग वालों पर यह कृपा भी करेगा कि उनके हृदय एक-दूसरे के लिए दर्पण की भाँति साफ कर देगा, किसी के विषय में किसी को कोई द्वेष अथवा घृणा नहीं रह जायेगी। कुछ ने इसका अर्थ यह निकाला है कि स्वर्ग वालों के मध्य जो पद तथा सम्मान का अन्तर होगा, उस पर एक-दूसरे से ईर्ष्या नहीं करेंगे। पहले भावार्थ की एक हदीस से पुष्टि होती है कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा नरक के मध्य पुल पर रोक लिया जायेगा तथा उनके मध्य आपस में जो कटुता होगी, एक-दूसरे को उनका वदला दे दिया जायेगा। यहाँ तक कि वे जब पूर्णरूप से शुद्ध एवं पवित्र हो जायेंगे तो उनको स्वर्ग में प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान कर दी जायेगी (सहीह बुख़ारी किताबुल मज़ालिम) जैसे सहाबा की आपसी कटुता है जो राजनैतिक प्रतिद्वन्दता के कारण उत्पन्न हुई। आदरणीय अली (رضي الله عنه) का कथन है, "मुझे आशा है कि मैं, उस्मान तथा तल्हा एवं ज़ुबैर उन लोगों में से होंगे जिन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। ﴿وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ﴾ "(इब्ने कसीर)

[2] अर्थात यह मार्गदर्शन जिससे हमें ईमान तथा सत्कर्म का जीवन प्राप्त हुआ तथा उन्हें अल्लाह के दरबार में स्वीकार करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है तथा उसका उपकार है। यदि यह कृपा तथा उपकार अल्लाह का न होता तो हम इस स्थान तक नहीं पहुँच सकते थे। इसी भावार्थ की यह हदीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह बात भली-भाँति जान लो कि तुम में से किसी का कर्म स्वर्ग में नहीं ले जायेगा, जब तक कि अल्लाह तआला की कृपा भी न होगी।" सहाबा (उनसे परमेश्वर प्रसन्न हो गया) ने पूछा, "हे ईशदूत (आप पर अल्लाह की कृपा तथा शान्ति हो) आप भी ?" आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "हाँ, मैं भी उस समय तक स्वर्ग में नहीं जाऊंगा जब तक अल्लाह की कृपा मुझे अपने दामन में न ले लेगी।" (सहीह बुख़ारी किताबुल रिक़ाक़ बाबुल क़स्द वल मदावम: अलल अमल, सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़ तुल क़ियाम: बाब लन् यद्ख़ुल अहदुल जन्न: बे अमलेही)

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

प्रभु के उपदेशक सत्य के साथ आये। तथा उन से घोषणा स्वरूप कहा जायेगा कि अपने कर्म के बदले तुम इस स्वर्ग के उत्तराधिकारी बना दिये गये।[1]

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा स्वर्गवासी नरकवसियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने परमेश्वर के वचन को जो हमें दिया सत्य पाया तो क्या तुम से तुम्हारे परमेश्वर ने जो वायदा किया सत्य पाया।[2] वे कहेंगे हाँ, फिर एक उदघोषक उनके बीच पुकारेगा कि अल्लाह का धिक्कार अत्याचारियों पर है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) जो अपने परमेश्वर के मार्ग से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं तथा वे परलोक का भी इन्कार करते हैं।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ

(४६) तथा उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा [3]

---

[1]यह व्याख्या पिछली बात तथा वर्णित हदीस के विपरीत नहीं है। इसलिए कि पुण्य का सौभाग्य भी स्वयं अल्लाह का उपकार तथा कृपा है।

[2]यही बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र के अवसर पर जब काफ़िर मारे गये तथा उन के शव एक कुऐं में फेंक दिये गये उन्हें सम्बोधित करते हुए कही, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "आप ऐसे लोगों को सम्बोधित कर रहे हैं जो मर चुके हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की सौगन्ध, मैं उन्हे जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, परन्तु अब वे उत्तर देने की शक्ति नहीं रखते।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः, बाब अरदे मक्अदिल मय्यित मिनल जन्नते अविन्नारे तथा बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़त्ले अबी जहल)

[3]"इन दोनों के मध्य" से तात्पर्य स्वर्ग नरक के मध्य अथवा ईमानवालों तथा काफिरों के मध्य है। हिजाबुन (حجاب) (आड़ अथवा पट) से दीवार तात्पर्य है जिस का वर्णन सूर: हदीद में है।

﴿فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ﴾

رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾

एवं "आराफ़" पर कुछ पुरुष होंगे[1] जो प्रत्येक को उनके लक्षणों से पहचान लेंगे,[2] तथा स्वर्ग-वासियों को पुकारेंगे कि तुम पर शान्ति हो, वह उस (स्वर्ग) में प्रवेश नहीं पाये होंगे तथा उसकी आशा रखते होंगे ।[3]

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा जब उनकी आँखें नरकवासियों पर पड़ेंगी तो कहेंगे कि हमारे परमेश्वर हमें अत्याचारियों के साथ न करना ।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उनके लक्षणों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी भीड़ एवं तुम्हारा अहंकार तुम्हारे काम नहीं आया ।[4]

"तो उनके मध्य एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी, जिसमें एक द्वार होगा ।" (सूर: *अल-हदीद*-१३) यही "आराफ़" की दीवार है ।

[1]यह कौन होंगे ? उनके निर्धारण के लिए व्याख्याकारों में अत्यन्त मतभेद है । अधिकतर व्याख्याकारों का विचार है कि यह वे लोग होंगे जिनके पुण्य तथा पाप समान होंगे । उनके पुण्य नरक में जाने से तथा पाप स्वर्ग में जाने से रोकेंगे तथा इस प्रकार अल्लाह की ओर से अन्तिम निर्णय होने तक वह अधर में लटके होंगे ।

[2] سيماء (सीमाअ) का अर्थ चिन्ह हैं । स्वर्ग वालों के मुख प्रकाश की ज्योति से उज्जवल होंगे तथा किसी पर थकावट के चिन्ह नहीं होंगे एवं नरक वालों के मुख काले तथा आँखें नीली होंगी । इस प्रकार वह दोनों प्रकार के लोगों को मुख चिन्हों से पहचान लेंगे ।

[3]यहाँ يطمعون (यतमअुन) का अर्थ कुछ ने (यअलमून) किये हैं अर्थात उनको ज्ञान होगा कि वह निकट ही स्वर्ग में प्रवेशित कर दिये जायेंगे ।

[4]ये नरक वाले लोग होंगे जिनको आराफ़ वाले उनके चिन्हों से पहचान लेंगे तथा वे अपने गुट तथा श्रेष्ठता पर जो घमण्ड करते थे, उसके उद्धरण देकर उन्हें याद दिलायेंगे कि ये वस्तुयें तुम्हारे काम न आयीं ।

(४९) क्या यहीं हैं जिनके विषय में तुम बल-पूर्वक शपथ ले रहे थे कि इन (स्वर्गवासियों) पर अल्लाह की कृपा[1] नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ तुम पर कोई भय नहीं और न तुम क्षुब्ध होगे।

أَهَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ ٱللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ٱدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा नरक के साथी स्वर्ग के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो अथवा अल्लाह ने तुम्हें जो जीविका प्रदान की है उसमें से कुछ, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को विश्वासहीनों के लिये निषेध कर दिया है।[2]

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا۟ عَلَيْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ ٱللَّهُ ۚ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾

(५१) जिन्होंने अपने धर्म को मनोरंजन एवं खेल बना लिया तथा भौतिक जीवन ने जिन को फुसला दिया, अतः आज हम उन्हें भूल जायेंगे।[3]

ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا ۚ فَٱلْيَوْمَ نَنسَىٰهُمْ كَمَا نَسُوا۟ لِقَآءَ

---

[1]इससे तात्पर्य ईमान वाले हैं जो संसार में निर्धन, कंगाल, असहाय तथा कमज़ोर प्रकार के लोग थे जिनका उपहास वर्णित घमण्डी लोग उड़ाया करते थे तथा कहा करते थे कि यदि ये अल्लाह के प्रिय होते तो इनका दुनिया में यही हाल होता ? उसके उपरान्त और दुस्साहस करके दावा करते कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह की कृपा हम पर होगी (जिस प्रकार से दुनिया में हो रही है) न कि इन पर। कुछ व्याख्याकार इस कथन को आराफ़ वालों के मुख से माना है। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि जब आराफ़ वाले नरक वालों को यह कहेंगे, "तुम्हारा गुट तथा तुम्हारा अपने को श्रेष्ठ समझना तुम्हारे कुछ काम नहीं आया।" तो उस समय अल्लाह की ओर से स्वर्ग वालों की ओर संकेत करते हुए कहा जायेगा, "यह वही लोग हैं जिनके विषय में तुम सौगन्ध खा-खाकर कहते थे कि उन पर अल्लाह की कृपा नहीं होगी (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि खाने-पीने की सुख-सुविधायें क़ियामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होंगी। ﴿خَالِصَةً يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾ (आयत संख्या-३२) यहां इसका अधिक स्पष्टीकरण स्वर्ग वालों के मुख से करा दिया गया है।

[3]हदीस में आता है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपने इस प्रकार के भक्त से कहेगा, "क्या मैं ने तुझे पत्नी तथा संतान प्रदान नहीं की थी ? तुझे मान-सम्मान से विभूषित नहीं किया था ? क्या ऊंट-घोड़े तेरी सेवा के लिए नहीं कर दिये थे ? तथा क्या

يَوۡمِهِمۡ هَٰذَا وَمَا كَانُواْ بِـَٔايَٰتِنَا يَجۡحَدُونَ ٥١

जैसे वह इस दिन को भूल गये तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

وَلَقَدۡ جِئۡنَٰهُم بِكِتَٰبٖ فَصَّلۡنَٰهُ عَلَىٰ عِلۡمٍ هُدٗى وَرَحۡمَةٗ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ٥٢

(५२) तथा हमने उन के पास एक शास्त्र ज्ञान पर आधारित सविस्तार विवरण के साथ भेज दिया है[1] जो मार्गदर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

هَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأۡوِيلَهُۥۚ يَوۡمَ يَأۡتِي تَأۡوِيلُهُۥ يَقُولُ ٱلَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبۡلُ قَدۡ جَآءَتۡ رُسُلُ

(५३) क्या वह इसके अन्तिम परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं ?[2] जिस दिन इस का अन्तिम परिणाम आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस

तू नेतृत्व करते समय लोगों से कर नहीं लेता था ? वह कहेगा, क्यों नहीं ? ऐ अल्लाह यह सभी बातें सत्य हैं। अल्लाह तआला उससे पूछेगा, क्या तू मुझसे मिलने पर विश्वास रखता था ? वह कहेगा नहीं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, जिस प्रकार तू मुझे भूला रहा, तुझे आज मैं भूल जाता हूँ" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद)। क़ुरआन करीम की इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि धर्म को खेलकूद बनाने वाले वही लोग होते हैं जो दुनिया के छल में लीन हो जाते हैं। ऐसे लोगों के हृदय से आख़िरत की चिन्ता तथा अल्लाह का भय निकल जाता है। इसलिए वह धर्म में भी अपनी ओर से जो कुछ चाहते हैं बढ़ा लेते हैं तथा धर्म के जिस भाग को चाहते हैं कर्म शून्य कर देते हैं अथवा उन्हें खेल-कूद का रूप दे देते हैं।

[1]यह अल्लाह तआला नरक वालों के विषय में ही कह रहा है कि हम नें पूर्ण ज्ञान के आधार पर ऐसी किताब भेज दी थी, जिसमें प्रत्येक बात स्पष्ट करके वर्णन कर दिया गया था। उन लोगों ने इससे लाभ नहीं उठाया, तो उनका दुर्भाग्य, वरन् जो लोग इस पर ईमान ले आये, वह मार्गदर्शन तथा अल्लाह की कृपा से लाभान्वित हुए। अर्थात हमने तो

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبۡعَثَ رَسُولٗا﴾

"जब तक हम रसूल भेज कर सभी तर्क पूर्ण नहीं कर देते, हम यातना नहीं देते" (*सूर: बनी इस्राईल-१५*) के अनुसार प्रबन्ध कर दिया था।

[2]तावील का अर्थ है किसी वस्तु की वास्तविकता तथा परिणाम। अर्थात अल्लाह की किताब के द्वारा वायदा तथा चेतावनी तथा स्वर्ग-नरक आदि का वर्णन कर दिया था परन्तु ये उस दुनिया का परिणाम अपनी आंखों से देखने की प्रतीक्षा में थे, तो अब वह परिणाम उनके समक्ष आ गया।

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۗ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٥٣

से पूर्व उसे भुला दिया वह कहेंगे कि हमारे परमेश्वर के उपदेशक सत्य ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे, अथवा हम पुनः (संसार में) भेज दिये जाते तो उसके सिवाये कर्म करते जो करते रहे, उन्होंने स्वयं को क्षति में डाल दिया तथा जो बातें मढ़ते रहे उनसे खो गईं।[1]

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ يُغْشِي

(५४) वस्तुतः तुम्हारा पोषक अल्लाह ही है जिस ने आकाशों एवं धरती को छः दिन में रचा,[2] तथा फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो

---

[1]अर्थात यह जिस परिणाम की प्रतीक्षा में थे, उनके समक्ष आ जाने के पश्चात् सत्यता को स्वीकार करने अथवा पुनः दुनिया में भेजने की इच्छा तथा अन्य किसी सिफ़ारिश करने वाले की खोज, यह सब बेकार होगी। वे ईष्टदेव भी उनसे लुप्त हो जायेंगे, जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते थे, वह न उनकी सहायता कर सकेंगे, न सिफ़ारिश तथा न नरक की यातना से ही छुड़ा सकेंगे।

[2]ये छः दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुद्धवार, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार हैं। शुक्रवार के दिन ही आदरणीय आदम को पैदा किया गया। शनिवार के दिन कहते हैं कुछ भी पैदा नहीं किया गया, इसीलिए इसे अरबी भाषा में योमुस सब्त कहा जाता है। क्योंकि सब्त का शाब्दार्थ 'काटना' है अर्थात उस दिन सृष्टि का कार्य सामाप्त कर दिया गया। फिर उस दिन से क्या तात्पर्य है ? हमारी दुनिया के दिन, जो सूर्योदय से प्रारम्भ होकर सूर्यास्त पर समाप्त हो जाता है। अथवा यह दिन हज़ार वर्षों के समान है ? जिस प्रकार अल्लाह के यहाँ दिन की गणना है, अथवा जिस प्रकार से क़ियामत के दिन के विषय में आता है। स्वभाविक रूप से दूसरी बात अधिक उचित प्रतीत होती है। क्योंकि उस समय तक तो सूर्य तथा चन्द्रमा का यह नियम ही नहीं था, आकाश तथा धरती की सृष्टि के पश्चात ही यह नियम प्रारम्भ हुआ। दूसरे यह कि यह परलोक की बात है, जिसका संसार अर्थात इस लोक से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए इस दिन की वास्तविकता तो अल्लाह ही जानता है। हम दृढ़ता से कोई बात नहीं कह सकते। क्योंकि इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला को तो अरबी भाषा के शब्द 'कुन' (كن) कह देना ही पर्याप्त है तथा वह हो जाता है, इसके अतिरिक्त उसने प्रत्येक वस्तु को विभिन्न प्रकार से उत्पन्न किया है, इसकी भी वास्तविकता अल्लाह तआला ही जानता है, फिर भी कुछ आलिमों ने उसकी एक बुद्धिमत्ता लोगों को सुविधा, सम्मान, तथा क्रमिक रूप से कार्य करने कि शिक्षा देना बताया है। والله أعلم

اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

गया,[1] वह रात्रि को दिन से ऐसे छुपा देता है, कि वह उसे तीव्र गति से आ लेती है [2] तथा सूर्य एवं चन्द्रमा तथा सितारे को रचा कि वे उस के आदेशाधीन हैं, सुन लो उसी की रचना तथा उसी का आदेश है, सर्वलोक का पोषक अति शुभ है।

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) अपने परमेश्वर को नम्रतापूर्वक एवं चुपके से भी पुकारो, वह अतिक्रमणकारियों से प्रेम नहीं करता है।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ

(५६) तथा धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न उत्पन्न करो एवं भय तथा आशा के साथ

---

[1] استواء (इस्तेवा) के अर्थ है 'उच्च' तथा' स्थिर' होना तथा सलफ़ ने बिना किसी भौतिक संरचना तथा बिना किसी तुलना के यही अर्थ लिए हैं। अर्थात अल्लाह तआला अर्श पर उच्च तथा स्थिर है। परन्तु किस प्रकार, किस स्थिति में, इसे हम वर्णन नहीं कर सकते न किसी प्रकार की तुलना अथवा उपमा ही प्रस्तुत कर सकते हैं नईम बिन हम्माद का कथन है, "जिस ने भी अल्लाह की तुलना अथवा उपमा किसी सृष्टि के साथ दिया उसने भी कुफ़्र किया तथा जिसने अल्लाह की, अपने विषय में वर्णित बात का इंकार किया उस ने भी कुफ़्र किया।" तथा अल्लाह के विषय में उसकी अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा वर्णन की गई बात को वर्णन करना उपमा नहीं है। इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के विषय में धार्मिक नियमों में वर्णन मिलते हैं तथा उनकी पुष्टि होती है उन पर बिना किसी तर्क तथा बिना स्थिति जाने तथा बिना उपमा के ईमान रखना आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[2] حثيثا (हषीषण) का अर्थ है अत्यधिक तीव्र गति से। तथा अर्थ है कि एक के पश्चात् दूसरा तुरंत आ जाता है। अर्थात दिन का प्रकाश आता है तो रात्रि का अंधेरा शीघ्र ही समाप्त हो जाता है तथा रात्रि आती है तो दिन का प्रकाश समाप्त हो जाता है तथा दूर तथा निकट अंधेरा छा जाता है।

قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

उसकी आराधना करो, निश्चय अल्लाह की दया सदाचारियों से निकट है ।[1]

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) और वही अल्लाह है जो अपनी दया से पूर्व शुभ सूचना[2] के लिये हवायें भेजता है यहाँ तक कि जब वह भारी मेघों को लाद कर लाती हैं[3] तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं फिर उससे जल वर्षा करते हैं फिर उससे प्रत्येक प्रकार के फल निकालते हैं ।[4] हम इसी प्रकार मृतकों को निकालेंगे ताकि तुम विचार करो ।[5]

---

[1]इन आयतों में चार बातों की शिक्षा दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर एवं धीमे स्वर में विनय की जाये । जिस प्रकार हदीस में आता है, "ऐ लोगो ! अपने जान के ऊपर दया करो (अर्थात धीमे स्वर से विनय करो) जिसको पुकार रहे हो, वह न बधिर है तथा न अनुपस्थित, वह तुम्हारी प्रार्थनायें सुनने वाला है तथा तुम्हारे निकट है ।"(सहीह बुखारी प्रार्थना पुस्तक अध्याय घाटी पर चढ़ने के समय प्रार्थना, मुस्लिम स्वर्ग पुस्तक, धीमे स्वर से जाप करने की प्रधानता का अध्याय) २. प्रार्थना में अधिकता न की जाये अर्थात अपने पद तथा शक्ति से अधिक प्रार्थना न की जाये ३. सुधार के पश्चात उपद्रव न फैलाया जाये अर्थात अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करके उपद्रव फैलाने में भाग न लिया जाये । ४. उसके प्रकोप का भय भी दिल में हो तथा उसकी कृपा की आशा भी । इस प्रकार से प्रार्थना करने वाले अच्छे व्यक्ति हैं कि अवश्य अल्लाह की कृपा उनके निकट है ।

[2]इस में अल्लाह (परमेश्वर) अपने पूज्य एवं पोषक होने का अन्य तर्क दे रहा है, फिर इस से पुनर्जीवित करने का प्रमाण दे रहा है । यहाँ दया से तात्पर्य वर्षा है अर्थात वर्षा से पहले वह शीतल वायु चलाता है जो वर्षा की शुभ सूचक होती है ।

[3]भारी बादल से तात्पर्य जल से परिपूर्ण मेघ है ।

[4]प्रत्येक प्रकार के फल, जो रंगों, तथा स्वादों एवं सुगंध में तथा रूप-रेखा में विभिन्न होते हैं ।

[5]जिस प्रकार से हम वर्षा करके प्रायः मृत धरती में जीवन उत्पन्न कर देते हैं तथा वह विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा करती है । उसी प्रकार क़ियामत के दिन सभी

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा स्वच्छ धरती प्रचूरता से अपने पौधे उपजाती है एवं ख़राब (भूमि) अति अल्प उपज लाती है,[1] इसी प्रकार हम लक्षणों को विभिन्न प्रकार से वर्णन करते हैं, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنِّيْٓ

(५९) हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन के वर्ग के पास भेजा तो उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग, अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय

मनुष्यों को जो मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो चुके होंगे, हम पुनर्जीवित करेंगे तथा फिर उनका निर्णय करेंगे।

[1]इसके अतिरिक्त यह उदाहरण भी हो सकता है। البلد الطيب से तात्पर्य शीघ्र समझने वाले البلد الخبيث से कुबुद्धि-भाषण तथा शिक्षा स्वीकार करने वाला दिल तथा उसके विपरीत दिल, ईमानवालों का दिल तथा अवसरवादियों का दिल अथवा पवित्र मनुष्य तथा अपवित्र मनुष्य। ईमानवाले, पवित्र मनुष्य तथा भाषण एवं शिक्षा ग्रहण करने वाला दिल वर्षा को स्वीकार करने वाली धरती के समान है, जो अल्लाह के मन्त्रों को सुन कर ईमान लाते हैं तथा पुण्य कार्य करने में और दृढ़ हो जाते हैं तथा दूसरा दिल इसके विपरीत जो ऊसर भूमि के समान है जो वर्षा का पानी स्वीकार नहीं करती अथवा स्वीकार करती है तो थोड़ा-सा जिससे उपज भी कम होती है। इसको हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वर्णन किया है, "मुझे अल्लाह तआला ने जो ज्ञान तथा निर्देश न देकर भेजा है, उसका उदाहरण इस मूसलाधार वर्षा के समान है जो धरती पर बरसी। उसके जो भाग उपजाऊ थे, उन्होंने पानी को अपने अन्दर सोख कर घास-फूस ख़ूब उगाया (अर्थात भरपूर उपज दी), उसके कुछ भाग कठोर थे जिन्होंने पानी रोक तो लिया (अन्दर सोखा नहीं) उससे अन्य लोगों ने लाभ उठाया, स्वयं भी पिया तथा खेतों की सिंचाई भी की तथा खेती की। तथा धरती का कुछ भाग बिल्कुल चटियल था, जिसने न पानी रोका तथा न कुछ उगाया। तो यह उस व्यक्ति का उदाहरण है जिस ने अल्लाह के धर्म में कुछ ज्ञान प्राप्त किया तथा अल्लाह ने मुझे जिस चीज़ के साथ भेजा उससे उसने लाभ उठाया, तथा स्वयं भी ज्ञान प्राप्त किया तथा दूसरों को भी सिखाया तथा उदाहरण उस व्यक्ति का भी है जिसने कुछ भी नही सीखा तथा न वह मार्गदर्शन ही स्वीकार किया जिसके साथ मुझे भेजा गया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाब फ़ज़ले मन अलेम व अल्लम)

कोई तुम्हारा उपास्य नहीं, निःसंदेह मैं तुम पर घोर दिन की यातना से डरता हूँ।	اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝
(६०) उनके वर्ग के प्रमुखों ने कहा कि हम आप को खुली कुपथा में देख रहे हैं।[1]	قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝
(६१) उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग के लोगो ! मैं विपथ नहीं परन्तु विश्व के पोषक का प्रतिनिधि हूँ।	قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
(६२) तुम्हें तुम्हारे स्वामी का सन्देश पहुँचाता हूँ तथा तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ तथा अल्लाह की ओर से वह ज्ञान रखता हूँ जो ज्ञान तुम नहीं रखते।	اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝
(६३) क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से तुम्हारे वर्ग के एक पुरुष पर कोई आदेश की बात आई है ताकि तुम्हें सचेत करे, तथा तुम संयम बरतो[2] तथा ताकि तुम पर दया की जाये।	اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

[1]शिर्क (अर्थात मिश्रणवाद) मानव मति को ऐसे विकार ग्रस्त कर देता है कि वह संमार्ग को कुमार्ग तथा कुमार्ग को संमार्ग समझने लगता है। ईशदूत नूह के वर्ग में भी यह भ्रम उत्पन्न हुआ। ईशदूत नूह जो उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुला रहे थे (परमेश्वर की शरण) वह उन्हें विपथ दिख रहे थे।

[2]ईशदूत नूह (जल पलावन मनु) तथा आदम (आदिमनु) के बीच दस पीढ़ियों का अन्तर है। आदरणीय नूह से कुछ पहले तक सभी लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी चले आ रहे थे फिर सर्वप्रथम एकेश्वरवाद से विमुखता ऐसे आई कि इस वर्ग के पुनीत लोगों का निधन हो गया तो उन के श्रद्धालुओं ने उन पर पूजास्थल बनाये तथा वहाँ उन के चित्र भी लटका दिये जिसका उद्देश्य यह था कि इस प्रकार उनके स्मरण से वह भी अल्लाह की उपासना करेंगे। कुछ समय व्यतीत होने पर उन्होंने इन चित्रों की मूर्तियाँ बनाई फिर कुछ समय के पश्चात् यह मुर्तियाँ पूज्य के रूप में आ गईं तथा उन की पूजा होने लगी। नूह के वर्ग के यह पाँच पुनीत वद्द, स्वाअ, यगूस, यऊक तथा नस्र देवता बन गये। ऐसी दशा में

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हमने नूह तथा उनके अनुयायियों को नौका में बचा लिया तथा जो हमारी आयतें (निशानियाँ) नहीं माने उन्हें डूबो दिया। वस्तुतः वह एक अंधा वर्ग था।[1]

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा आद के पास उनके भाई (ईशदूत) हूद को भेजा[2] उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग! अल्लाह की आराधना करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं क्या तुम डरते नहीं?

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) उन के समुदाय के विश्वासहीन प्रमुखों ने कहा, हमें तुम मूर्ख लग रहे हो,[3] वस्तुतः हम तुम को झूठों मे से समझते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगो! मुझ में मूर्खता नहीं परन्तु मैं विश्व के पोषक का संदेशवाहक हूँ।

अल्लाह ने आदरणीय नूह को उन का संदेशवाहक बनाकर भेजा जिन्होंने साढ़े नौ सौ वर्ष उन्हें आमन्त्रण दिया। किन्तु कुछ लोगों के सिवाय किसी पर आप की शिक्षा का प्रभाव नहीं पड़ा। अन्ततः निष्ठों के सिवाये सब जल प्रलय में डुबा दिये गये। इस आयत में बताया जा रहा है कि नूह के वर्ग ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि इन्हीं में का एक व्यक्ति ईशदूत बन कर आया जो उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डरा रहा है। अर्थात उनके विचार से मानव ईशदूत बनाने योग्य नहीं है।

[1] अर्थात सत्य से, सत्य को न देखते थे न अपनाने के लिए तैयार थे।

[2] यह आद वर्ग प्रथम आद थे जिनका निवास यमन की रेतीली पहाड़ियों पर था तथा अपने बल एवं शक्ति में अनुपम थे। इनकी ओर उन्हीं की जाति के एक व्यक्ति आदरणीय "हूद" ईशदूत बन कर आये।

[3] उन के विचार में उनके पूवर्जो के पूज्य को त्याग कर अद्वैत तथा एक की पूजा की बात मूर्खता थी।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

(६८) मैं तुम्हें अपने परमेश्वर का संदेश पहुँचाता हूँ एवं तुम्हारा ईमानदार शुभचिन्तक हूँ।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) क्या तम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से कोई उपदेश की बात तुम्हीं में से एक पुरुष के पास आई है ताकि वह तुम्हें सचेत करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह) ने तुम्हें नूह के वर्ग के पश्चात उन के स्थान पर कर दिया तथा तुम्हारी आकृति को अधिक विस्तार दिया,[1] अत: तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं को याद करो ताकि सफल हो जाओ।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम मात्र एक अल्लाह की पूजा करें तथा अपने पूर्वजों के पूज्यों को त्याग दें।[2] अत: तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ यदि तुम सत्यवादी हो।

---

[1]एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसके विषय में वर्णन किया है।

﴿ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴾

"इस जैसी शक्तिवाला समुदाय कहीं पैदा नहीं किया गया।" (*सूर: अल-फ़ज्र-८*)

अपनी इस शक्ति के घमण्ड में आकर यह कहा कि ﴿ مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ﴾ "हमसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?" अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "जिसने उन्हें पैदा किया है वह उनसे अधिक शक्तिशाली है।" (*सूर: हा॰ मीम॰ सजद:-१५*)

[2]पूर्वजों का अनुकरण प्रत्येक समय में भटकावे का कारण रहा है। आद के समुदाय वालों ने भी यही तर्क प्रस्तुत किया तथा मूर्तिपूजा छोड़कर एकेश्वरवाद (तौहीद) का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए। दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी अपने पूर्वजों के अनुकरण का रोग सामान्य रूप से है।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۗءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

(७१) उन्होंने कहा कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर प्रकोप एवं क्रोध आ ही गया,[1] क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के विषय में विवाद करते हो[2] जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, जिनका कोई तर्क अल्लाह ने नहीं उतारा है। तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तो हम ने उसे तथा उसके अनुयायियों को अपनी दया से बचा लिया तथा उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया एवं वे ईमान वाले नहीं थे।[3]

وَاِلٰي ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ

(७३) तथा समूद के पास उनके भाई सालेह को (भेजा)। उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगों! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से प्रमाण आ गया। यह

---

[1] رجس का अर्थ अपवित्रता है, परन्तु यहाँ (रिज्स) رجز से बदला हुआ है जिस का अर्थ प्रकोप है, फिर यहाँ रिज्स खिन्नता तथा क्रोध के अर्थ में है। (इब्ने कसीर)

[2] इससे तात्पर्य वह नाम हैं जो उन्होंने अपने पूज्यों के रखे हुये थे जैसे सदा, समूद, हबा आदि जैसे नूह के वर्ग के पाँच देवताओं के नाम की चर्चा अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में की है। जैसे अरब के मूर्तिपूजकों के मूर्तियों के नाम लात, उज्जा, मनात तथा हुबल आदि थे, जैसे आधुनिक मिश्रणवादी आस्था एवं कर्मों में लीन लोगों के नाम रखे हुये हैं, उदाहरणार्थ "दाता गंज बख़्श", "ख़ाजा ग़रीब नवाज़", "बाबा फरीद शकर गंज", "मुश्किल कुशा" आदि जिन के पूज्य अथवा मुश्किल कुशा (संकट मोचन) होने का कोई प्रमाण उनके पास नहीं।

[3] इस समुदाय पर हवाओं का प्रकोप आया जो निरंतर सात दिन आठ रातें चलता रहा तथा आद के लोगों के शव जिन्हें अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था खजूर के खोखले वृक्ष की भाँति धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये प्रमाण है। उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दुःखद यातना पकड़ ले।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝

(७४) तथा तुम उन परिस्थितियों को याद करो जब अल्लाह ने तुमको आद (वर्ग) के पश्चात उत्तराधिकारी बनाया एवं धरती में तुम्हें निवास स्थान दिया, तुम उसकी समतल भूमि में भवनों को निर्माण करते हो।[1] तथा पर्वतों को काट कर घर बनाते हो।[2] तो अल्लाह की अनुकम्पाओं का स्मरण करो तथा धरती में उपद्रव करते न फिरो।[3]

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝

(७५) उनकी क़ौम के अहंकारी प्रमुखों ने कहा अपने निर्बलों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें विश्वास है कि सालेह अपने परमेश्वर के भेजे हुये है, उन्होंने कहा कि हम उस के प्रति विश्वास रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।[4]

---

[1]इसका अर्थ है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो तथा उन ईंटों से महल तैयार करते हो। जैसे आज भी भट्टों पर इसी प्रकार मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती हैं।

[2]यह उनकी शारीरिक शक्ति तथा शिल्पकारी का वर्णन है।

[3]अर्थात इन उपकार पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करो तथा उसकी आज्ञा पालन का मार्ग अपनाओ न कि उपकार की अवज्ञा का तथा बुरे कर्मों को करके उपद्रव फैलाओ।

[4]अर्थात जो एकेश्वर का आमन्त्रण वह लेकर आये हैं, वह चूँकि प्राकृतिक अभियाचना है, हम तो उस पर ईमान ले आये हैं। शेष रही यह बात कि सालेह वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं ? जो उनका प्रश्न था, उससे उन ईमानवालों ने इंकार नहीं किया क्योंकि वे

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِيَ آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ⑦⑥

(७६) अहंकारी प्रमुखों ने कहा कि तुम जिसके प्रति विश्वास करते हो हम विश्वास नहीं रखते ।[1]

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوا يَاصَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑦⑦

(७७) अत: उन्होंने ऊँटनी का वध कर दिया एवं अपने परमेश्वर के आदेश की अवहेलना की तथा कहा कि हे सालेह, यदि तुम ईशदूत हो तो अपनी धमकी पूरी करो ।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ⑦⑧

(७८) फिर उन्हें भूकम्प ने धर लिया [2] तथा वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये ।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَ نَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ⑦⑨

(७९) वह (सालेह) उन से मुँह फेर कर चल दिये, तथा कहा[3] कि हे मेरे वर्ग के लोगो ! मैंने तुमको अपने परमेश्वर का आदेश पहुँचा दिया तथा तुम्हारा शुभचिंतक रहा किन्तु तुम शुभचिंतकों से प्रेम नहीं करते ।

उनके अल्लाह की ओर से रसूल होने पर विवाद करना उचित नहीं समझते थे । उनके निकट उनकी रिसालत साक्षात् वास्तविक एवं सत्य थी, जैसाकि वास्तव में थी ।

[1]इस उचित उत्तर के पश्चात वे घमण्ड के कारण इंकार पर अड़े रहे ।

[2]यहाँ رجفة (भूकम्प) का वर्णन है । अन्य स्थान पर صيحة (गर्जन) का । इससे ज्ञात होता है कि यह दोनों प्रकार का प्रकोप उन पर आया । ऊपर से गर्जन तथा नीचे से भूकम्प । इन दोनों प्रकोपों ने उन्हें नष्ट-विनष्ट कर दिया ।

[3]यह नष्ट होने के पूर्व का सम्बोधन है अथवा नष्ट होने के पश्चात्, इसी प्रकार का सम्बोधन है जिस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र का युद्ध समाप्त होने के पश्चात बद्र के स्थान पर मूर्तिपूजकों की लाशों को सम्बोधित करते हुए कहा था ।

وَ لُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝٨٠

(८०) तथा हम ने लूत को भेजा[1] जब कि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम ऐसा कुकर्म करते हो, जिसे तुम से पूर्व किसी ने अखिल जगत में नहीं किया ।

اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ شَهۡوَةً

(८१) तुम पुरुषों के साथ सम्भोग करते हो[2]

---

[1]आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के भतीजे थे तथा आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाने वालों में से थे। फिर स्वयं उनको अल्लाह ने एक क्षेत्र का नबी बना कर भेजा। यह क्षेत्र जार्डन तथा बैतुल मक़दिस के मध्य का क्षेत्र है, जिसे सदूम कहा जाता है, यह धरती हरियाली तथा उपजाऊ थी तथा यहाँ हर प्रकार के फल तथा अनाज की उपज होती थी। क़ुरआन ने इस स्थान का مؤتفكة अथवा مؤتفكات के शब्दों में वर्णन किया है। आदरणीय लूत ने सर्वप्रथम सम्भवत: अल्लाह के एक होने का आमन्त्रण दिया जो प्रत्येक नबी के आमन्त्रण की आधारशिला थी तथा सर्वप्रथम वह इसी का आमन्त्रण अपने समुदाय को देते थे। जैसाकि पिछले नबियों की घटनाओं में जिनका वर्णन अभी गुज़रा है, देखा जा सकता है। दूसरी अन्य बड़ी बुराई थी पुरुषों के साथ कुकर्म, जो लूत के समुदाय में था, उसकी बुराई तथा कुकर्म का वर्णन किया। इससे यह ज्ञात होता है कि यह एक ऐसा पाप है जिसको सर्वप्रथम इसी लूत के समुदाय ने किया, इस पाप का नाम अरबी में लवातत् पड़ गया। इसलिए उचित समझा गया कि इस समुदाय को मूल अपराध के दुष्परिणामों से सूचित किया जाये। इसके अतिरिक्त आदरणीय इब्राहीम के द्वारा एकेश्वरवाद का आमन्त्रण यहाँ पहुँच चुका होगा। बाल मैथुन के दण्ड में इमामों के मध्य मतभेद है। कुछ इमामों के निकट वही दण्ड है जो व्यभिचार का दण्ड है। अर्थात अपराधी यदि विवाहित है तो पत्थरों से मार कर मार डाला जाये, यदि अविवाहित है तो सौ कोड़े। कुछ के निकट इसका दण्ड पत्थर से मार डालना है, चाहे अपराधी कैसा भी हो। कुछ के निकट करने करवाने वाले दोनों का वध कर दिया जाये। परन्तु इमाम अबु हनीफ़ा केवल निन्दा करने के दण्ड के पक्ष में हैं, कोड़ों अथवा किसी अन्य प्रकार के दण्ड के नहीं। (तोहफ़तुल अहवज़ी भाग-५ पृष्ठ १७)

[2]अर्थात पुरुषों के पास तुम इस असभ्य कार्य के लिए मात्र सम्भोग के उद्देश्य से आते हो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता जो बुद्धि के योग्य हो। इस आधार पर वे पशुओं के समान थे जो मात्र सम्भोग के लिए एक-दूसरे पर चढ़ते हैं।

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

स्त्रियों को छोड़ कर ।[1] बल्कि तुम तो सीमा से गुज़र गये हो ।[2]

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा उनके समुदाय से कोई उत्तर न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो । यह लोग बड़े पवित्र महातमा बनते हैं ।[3]

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो हम ने उसको (लूत) तथा उन के सम्बन्धियों को बचा लिया सिवाय उनकी पत्नी के कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (प्रकोप में) रह गये थे ।[4]

---

[1]जो सहवास तथा स्वाद का उचित स्थान है । यह उनकी प्रकृति के भ्रष्ट हो जाने की ओर संकेत है, अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष की कामवासना की तृप्ति के लिए स्त्री के गुप्तांग को स्थान तथा उचित बताया है परन्तु अत्याचारियों ने इसको छोड़ कर पुरुषों की गुदा को उसके लिए प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया ।

[2]परन्तु अब इस अप्राकृतिक कर्म तथा अल्लाह की निर्धारित सीमा के उल्लंघन को आधुनिक लोगों न अपना लिया है तो यह मानव जाति का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया गया है जिससे रोकने का किसी को कोई अधिकार नहीं । अब गुदा मैथुन को वैधानिक सुरक्षा प्राप्त है तथा यह कोई अपराध नहीं रह गया है । (अल्लाह हमें इस पाप से सुरक्षित रखे)

[3]यह तो आदरणीय लूत को बस्ती से निकालने का कारण है । शेष उनकी पवित्रता का प्रदर्शन या तो वास्तविक रूप से है तथा उनका उद्देश्य यह रहा हो कि यह लोग इस बुराई से बचना चाहते हैं, इसलिए अच्छा है कि यह हमारे साथ इस बस्ती में ही न रहें । अथवा यह उपहास तथा मजाक़ के रूप में उन्होंने कहा हो ।

[4] إنها كانت من الباقين في عذاب الله अर्थात वह उन लोगों मे शेष रह गयी जिन पर अल्लाह का प्रकोप आया क्योंकि वह भी मुसलमान नहीं थी । उसका समर्थन भी अपराधियों के साथ था । कुछ ने इसका अनुवाद "मरने वालों में से" किया है परन्तु यह पूरक अर्थ हैं, वास्तविक अर्थ वही हैं ।

(८४) तथा हम ने उन के ऊपर एक नयी प्रकार की वर्षा की,[1] तो देखो तो सही कि उन अपराधियों का क्या परिणाम हुआ ?[2]

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

(८५) तथा हम ने मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा ।[3] उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य देव नहीं । तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारी ओर स्पष्ट निशानी आ चुकी है, बस तुम माप-तौल

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

[1]यह विशेष प्रकार की वर्षा क्या थी ? पत्थरों की वर्षा, जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया है ।

﴿وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ﴾

"हमने उन पर तह पर तह पत्थरों की वर्षा बरसायी ।" (सूर: हूद-८२)

इससे पूर्व फ़रमाया جعلنا عاليها سافلها "हमने उस बस्ती को (उलट कर) नीचे कर दिया ।"

[2]अर्थात हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) देखिए तो सही, जो खुल कर अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते हैं तथा पैग़म्बरों को झुठलाते हैं, उनका परिणाम क्या हुआ ?

[3]मदयन आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित क़बीले का नाम भी मदयन तथा जिस बस्ती में वे निवास करते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया । इस प्रकार इस को क़बीले तथा बस्ती दोनों के लिए बोला जाता है । यह बस्ती हिजाज़ क्षेत्र के मार्ग में मआन के निकट है । इन्हीं को क़ुरआन में अन्य स्थान पर أصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है । उनकी ओर आदरणीय शुऐब नबी बनाकर भेजे गये । देखिये (सूर: *अल-शुअराअ-१७६*)

टिप्पणी : प्रत्येक नबी को उनके समुदाय का भाई कहा गया है । जिसका अर्थ उसी समुदाय तथा जाति का एक व्यक्ति है, जिसको कुछ स्थान पर رسولا منهم अथवा من أنفسهم भी कहा गया है । तथा अर्थ उन सब का यही है कि रसूल तथा नबी मनुष्यों में से ही एक मनुष्य होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों के मार्गदर्शन के लिए चुन लेता है तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उस पर अपनी किताब तथा आदेश उतारता है ।

أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

पूरा-पूरा किया करो तथा लोगों को उनकी वस्तुऐं कम कर के न दो।[1] तथा सम्पूर्ण धरती पर इसके पश्चात् कि सुधार कर दिया गया उपद्रव मत फैलाओ। यह तुम्हारे लिए लाभकारी है यदि तुम ईमान ले आओ।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा तुम प्रत्येक मार्ग पर उन्हें धमकी देने एवं अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये जो अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये न बैठा करो तथा उसमें त्रुटि की खोज करते हुए।[2] तथा स्मरण करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें अधिक कर दिया फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।

---

[1]तौहीद (अद्वैत) के प्रचार के पश्चात् उस वर्ग में नाप-तौल की कमी एक बड़ा दोष था जिस से रोका गया तथा पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की शिक्षा दी गई, यह दोष भी अति भयावह है जिस से उस समुदाय के नैतिक पतन का पता लगता है जिस में यह दोष पाया जाता है। यह अति घोर अपभोग है कि पैसे तो पूरे लिये जायें तथा चीज़ कम दी जाये। अतः *सूरः मुतफ़्फ़ेफ़ीन* में ऐसे ही लोगों के लिए विनाश की सूचना दी गई है।

[2]अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटि की खोज करना प्रत्येक युग के दुराचारियों का प्रिय व्यवहार रहा है जिस का उदाहरण वर्तमान में धर्म के आधुनिकीकरण कारियों तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रेमियों में देखा जाता है। (अल्लाह हम को उन से सुरक्षित रखे) इस के सिवाय अल्लाह के मार्ग से रोकने के और भी कई अर्थ किये गये हैं, उदाहरणार्थ लोगों को दुख देने के लिये मार्गों पर बैठना जैसा कि दुराचारियों का आचरण है, अथवा आदरणीय शुऐब की तरफ जाने के मार्गों से रोकना ताकि जो लोग उधर जायें उन्हें रोका तथा भ्रम में डाला जाये, जैसे मक्का नगर के कुरैश करते थे अथवा धर्म के मार्गों पर बैठना तथा धर्मावलम्बियों को उस से रोकना अथवा लूटमार के लिये नाकों पर बैठना ताकि राहियों को लूट लें, अथवा कुछ के समीप कर तथा चुंगी लेने के लिये मार्गों पर बैठना है। इमाम शौकानी ने कहा कि यह सभी अर्थ इस के अन्तर्गत आ सकते हैं क्योंकि यह संभव है कि वह सभी उपरोक्त दुराचार करते रहे हों (फ़तहुल क़दीर)

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा यदि तुम में से कुछ लोगों ने उस आदेश के प्रति विश्वास किया जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ तथा कुछ ने विश्वास नहीं किया है तो थोड़ा धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे तथा वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।[1]

---

[1]यह अधर्म को सहन करने का आदेश नहीं वरन् उनके लिये धमकी तथा चेतावनी है क्योंकि अल्लाह का निर्णय सदाचारियों को दुराचारियों पर विजय तथा प्रभुत्व देने का ही होता है। यह ऐसे ही है जैसाकि दूसरे स्थान पर उसका कथन है कि

(فتربصوا إنا معكم متربصون)

"तुम प्रतिक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतिक्षा कर रहे हैं।" (सूरः तौबः-५२)